# निषद्–सुधा बिन्दु (फरवरी)

**स त्वमग्नि्ँ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्व्ँ श्रद्दधानाय मह्यम्।**
**स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण।।**

**(कठोपनिषद् : १/१/१३)**

(नचिकेता ने आगे कहाह्नह्न)''हे मृत्युदेव! आप उस स्वर्ग–प्राप्ति के साधनरूप अग्नि को जानते हैं। आप मुझ श्रद्धालु को वह अग्निविद्या भली–भाँति समझा कर कहिए, जिसे जान कर लोग स्वर्गलोक में रहते हुए अमृतत्व (सापेक्ष अमरत्व) को प्राप्त होते हैं। यह मैं आपसे दूसरा वर माँगता हूँ।''

श्रद्धा ही वह नेत्र है जो प्रभु को देखता है। यही वह हाथ है जो प्रभु को पकड़े रहता है। श्रद्धा ही बल तथा शक्ति है। श्रद्धा आध्यात्मिक मार्ग को आलोकित करती है तथा भक्त को अमृतत्व के दूसरे तट पर पहुँचा देती है।

**स्वामी शिवानन्द**

# शिवदेशिकेन्द्र स्तुतिः

**श्री स्वामी विज्ञानानन्दः**

**यत्पादाम्बुजभक्तिरेव सततं स्वादीयसी श्रेयसी**
**सद्यः सिद्धिकरीति निर्मलमनोपेता विधेया मुदा ।**
**यच्छिष्यत्वमुपागताश्च नियमैर्युक्ता गताः संसृतेः**
**पारं तं शिवदेशिकेन्द्रयमिनं वन्दामहे सन्ततम् ।।१**

हम उन सन्त शिवदेशिकेन्द्र की सतत वन्दना करते हैं जिनके चरणकमलों की सेवा एवं भक्ति सुमधुर है तथा श्रेयस (मुक्ति) की ओर ले जाने वाली है, मन को तत्काल शुद्धि एवं सुफल प्रदायिनी है, प्रेरणाप्रद एवं आनन्द देने वाली है; जिनके शिष्य यम-नियमों का पालन करने वाले हैं तथा वे अत्यन्त सुगमता से जन्म-मरण के चक्र से युक्त इस भयावह भवसागर को पार कर गये हैं।

**यद्वाक्योत्थसुधारसेन मुदितस्वान्ताः प्रशान्ता मुहुः**
**संख्यातीतयो परं पदमहो प्रापुर्विधेयाः सदा ।**
**यं साक्षादपरोक्षमद्वयमजं सम्मेनिरे मानवाः**
**तं शान्तं शिवदेशिकेन्द्रयमिनं वन्दामहे सन्ततम् ।।२**

हम उन सदा प्रशान्त सन्त शिवदेशिकेन्द्र को सतत नमन करते हैं, जिनके अमृतमय वचनों से युक्त निर्देशनों का पालन करके असंख्य लोग परम लक्ष्य को प्राप्त कर गये हैं; जिनकी लोग उस अजन्मा, अदृष्ट, अद्वितीय परमात्मा के रूप में आराधना करते हैं।

**यः श्रौतं मतमत्र शंकरगुरुप्रोक्तं सदा सज्जनैः**
**सेव्यं पोषयितुं पुनर्भुवि नृणां मध्ये शिवः स स्वयम् ।**
**आविर्भूय निरन्तरं वितनुते विद्यां प्रशस्तां त्रयीं**
**तं प्राज्ञं शिवदेशिकेन्द्रयमिनं वन्दामहे सन्ततम् ।।३**

हम उन सर्वज्ञ शिवदेशिकेन्द्र के समक्ष साष्टांग प्रणत हैं जो श्री शंकराचार्य जी की शास्त्रीय शिक्षाओं का प्रचार करते हैं; सत्पुरुष जिनकी सदा सेवा में रहते हैं; जो वेदों का त्रिविध ज्ञान प्रदान करने के लिए भगवान् शिव के रूप में स्वयं अवतरित हुए हैं।

**यत्कारुण्यलवेन दग्धकलुषा विद्वत्समाजे वरा**
**ब्रह्मानन्दमहासमुद्रलहरीमग्ना निमग्ना मुहुः ।**
**यस्मिन्नित्यसुखप्रबोधवपुषि प्राप्ता लयं संसृति-**
**स्तं पूज्यं शिवदेशिकेन्द्रयमिनं वन्दामहे सन्ततम् ।।४**

हम उन श्रद्धेय शिवदेशिकेन्द्र गुरु की उपासना करते हैं जिनकी करुणामयी दृष्टि हृदय को पूर्णतया शुद्ध करने के लिए पर्याप्त है, यह दृष्टि व्यक्ति को विद्वत् समाज में श्रेष्ठ बना देती है तथा ब्रह्मानन्द के महासमुद्र में लीन कर देती है; जिनके आनन्दपूर्ण सान्निध्य में लोग सदा रहने के लिए तथा अपनी जीवन भर की समस्याओं से उबरने के लिए लालायित रहते हैं। **(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)**

## शाश्वत प्रकाश के उत्सर्जक : गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी

गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी किसी धूमकेतु की तरह से नहीं आये थे जो आकाश में उल्कापात के समय सघन प्रकाश छोड़ कर बुझने पर पुनः चारों और अँधेरा छोड़ जाता है, बल्कि उसके विपरीत उन्होंने एक महान्, शाश्वत प्रकाश हमारे लिए छोड़ा है। यदि हम आँखें खोल कर उस प्रकाश को देखने का प्रयास करें और अपने जीवन-पथ को प्रकाशित करने का उसे साधन बनायें तो हम कभी अँधेरे में नहीं रहेंगे। यही कारण है कि सारी मानव-जाति (भले ही किसी ने उनके दर्शन किये हों या नहीं) उनकी संगति से सदा आनन्दित होती रहेगी। **ह्नह्नस्वामी चिदानन्द**

# ईश्वर सर्वप्रथम, संसार उसके अनन्तर और स्वयं व्यक्ति सबसे अन्त में

**परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज**

'ईश्वर सर्वप्रथम, संसार उसके अनन्तर और स्वयं व्यक्ति सबसे अन्त में'ह्नह्नइस सरल किन्तु महान् आदेश का विस्मरण ही जीवन की सभी बुराइयों और पापों का कारण है। इस आदेश को भुला देने पर ही मनुष्य के जीवन में दुःख और चिन्ताओं का उद्‌भव प्रारम्भ हो जाता है।

मनुष्य स्वार्थपरता के कारण ही इस महान् आदेश को विस्मृत करता है। स्वार्थपरता ही मनुष्य को सर्वप्रथम अपने को, तत्पश्चात् विश्व को और अन्त में ईश्वर को स्थान देने के लिए प्रेरित करती है। स्वार्थपरता वह आद्य पाप है जो मनुष्य को संसार-चक्र में आबद्ध करता है और उसे कष्ट, शोक और मृत्यु देता है। स्वार्थपरता का कारण अज्ञान है।

हमारे विचारों और भावनाओं के साक्षी, अन्तर्यामी प्रभु को विस्मरण करना अज्ञान है। इस विनाशशील स्थूल शरीर में तादात्म्य-भाव रखना अज्ञान है। 'एक ही आत्मा सबमें समान रूप से स्थित है'ह्नह्नइस तथ्य को विस्मृत करना अज्ञान है। नाम-रूप के प्रभाव में आ कर सबमें स्थित आत्मा का विस्मरण अज्ञान है।

अज्ञान एक प्रकार की प्रभावशाली औषध है जो मनुष्य को चेतनाहीन बना देती है। अज्ञान काम, घृणा और भय उत्पन्न करता है। अज्ञान आपकी यथार्थ दृष्टि को रोकता, आपको प्रवंचित करता तथा पतित बनाता है।

अज्ञान से स्वार्थपरता का उद्‌भव होता है। स्वार्थपरता से कामनाओं का जन्म होता है। कामनाएँ मनुष्य को सकाम कर्मों में प्रवृत्त करती हैं और सकाम कर्म मनुष्य को जन्म-मृत्यु के चक्र में बाँध देते हैं।

अज्ञान ही आपका आन्तरिक शत्रु है। इसे नष्ट करें। इस शत्रु का निवास आपके मन में है। बाह्य प्रकृति तथा अन्तरिक्ष की विजय वास्तविक विजय नहीं है। अन्तःप्रकृति और दहराकाश की विजय ही वास्तविक विजय है। जिसने अपने मन पर विजय प्राप्त कर ली है, वही सबसे महान् योद्धा है। जिसने अपने मन को जीत लिया है, वह विश्व-विजेता से बढ़ कर शूरवीर है। आत्म-साक्षात्कार, सुख, शान्ति और आनन्द की प्राप्ति के मार्ग की बाधाएँ मन में ही हैं। हमारी वर्तमान अवस्था हमारे अतीत के विचारों का ही अपरोक्ष परिणाम है। यह हमारे विचारों पर ही आश्रित है। यह हमारे विचारों से ही निर्मित है। इस भाँति हमारे भावी जीवन का निर्माण भी हमारे वर्तमान विचारोंह्नर निर्भर करता है। अतः सम्यक् विचार की आदत का विकास कीजिए। शुद्ध विचार महान् शक्ति है। शुद्ध विचार की सर्वत्र अबाध गति है। सन्त और महात्मा जन अपने शुद्ध और सात्त्विक विचारों के द्वारा बहुसंख्यक समाज-सुधारकों की अपेक्षा मानवता की कहीं अधिक मूल्यवान् सेवा करते हैं।

मन का दास बनना अज्ञान है। मन पर आधिपत्य रखना बुद्धिमत्ता है। अतः मन पर विजय ही आपको शान्ति दे सकती है, अन्य कुछ भी नहीं।

ज्ञान-खड्ग से मन के साथ संग्राम करें। विवेक और वैराग्य का विकास करें। मन को इन्द्रियों की ओर से मोड़ें।

वीरतापूर्वक आन्तरिक संग्राम करें। आत्मानुशासन, सद्गुणों, के विकास तथा उच्चतर चेतना के द्वारा मन पर विजय प्राप्त करें। दिव्य जीवन यापन करें।

काम, क्रोध, ईर्ष्या और घृणा—ये चार प्रकार की ज्वालाएँ मन में निवास करती हैं। ये ज्वालाएँ आपकी आत्मा को जला डालें, इससे पूर्व ही आप इन्हें प्रशमित कर डालें।

अपने में दिव्यता का साक्षात्कार करें। सबमें दिव्यता का साक्षात्कार करें। इस अखिल विश्व में भगवान् व्याप्त हैं। यहाँ कुछ भी अशिव नहीं है, कुछ भी हेय नहीं है। यह विश्व एक महान् पाठशाला है। प्रत्येक अनुभव से अपने जीवन का पाठ भली-भाँति सीखिए। इस संसार की प्रत्येक वस्तु से आपको कुछ-न-कुछ शिक्षा प्राप्त होगी। जिनके नेत्र हैं, वे इसे देखते हैं। जिनके कान हैं, वे इसे सुनते हैं।

एक बार मैं आपसे पुनः कहता हूँ—'ईश्वर सर्वप्रथम, संसार उसके अनन्तर और स्वयं व्यक्ति सबसे अन्त में।' इस उत्कृष्ट आदेश का अभ्यास करें। तभी आपको शान्ति की प्राप्ति होगी। तभी आपको सुख मिलेगा। तभी आपको आनन्द प्राप्त होगा।

भगवान् आपको शाश्वत आनन्द, चिरन्तन शान्ति और आध्यात्मिक प्रकाश प्रदान करें! **(अनूदित)**

## योग की परिभाषा

'योग' शब्द संस्कृत धातु 'युज्' से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है मिलना। आध्यात्मिक अर्थ में यह वह प्रक्रिया है जिससे योगी जीवात्मा तथा परमात्मा की एकता का साक्षात्कार करता है। योग का अर्थ है ईश्वर से मिलन। यही मानव-जीवन का लक्ष्य है। योग वह आत्म-विज्ञान है जो मानव-आत्मा को परमात्मा से मिलने की विधि बतलाता है। योग दिव्य विज्ञान है जो जीवात्मा को दृश्य विषय-जगत् से मुक्त करता तथा परमात्मा से युक्त करता है।

समत्व योग है। ब्रह्म के साथ तादात्म्य योग है। ब्रह्म के साथ एकीभूत होना योग है। ब्रह्म में स्थित होना योग है। ब्रह्म के साथ एकता, तद्रूपता तथा अभिन्नता योग है। पतंजलि के योगसूत्र (१-३) में बताया गया है : ''**तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्**—जब चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाता है, तब द्रष्टा (पुरुष) की अपने स्वरूप में स्थिति हो जाती है।''

दत्तात्रेय-संहिता में आप देखेंगे : ''**सर्वचिन्तापरित्यागः निश्चिन्ता योग उच्यते**—सभी संकल्पों-विकल्पों के निष्क्रिय हो जाने पर जो एक तूष्णी और परिशान्त अवस्था प्राप्त होती है, वही योग है।'' उसी में पुनः इसकी परिभाषा दी गयी है : ''**योगसमाधिः समतावस्था जीवात्मपरमात्मनोः**—जीवात्मा जब परमात्मा के साथ समता की अवस्था को प्राप्त कर लेता है, तब इसे योग-समाधि कहते हैं।'' भगवद्गीता कहती है : ''**योगः कर्मसुकौशलम्**—जीवन में अपने लिए जो निर्धारित काम हैं, उन्हें दक्षतापूर्वक करते जाना ही योग है (२-५०)'' और ''**समत्वं योग उच्यते**—चित्त की समता का नाम योग है (२-४८)।''

सामान्य अर्थ में हम योग से कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग, ज्ञानयोग, हठयोग, मन्त्रयोग तथा लययोग का अर्थ रखते हैं; परन्तु अवधारणा में इसका अर्थ पतंजलि महर्षि का अष्टांगयोग या राजयोग है।

योग शब्द को गौण रूप से उन साधनों के लिए भी प्रयोग में लाते हैं जिनसे योग का निर्माण होता है, जो योग की सिद्धि में सहायक होते हैं।

**स्वामी शिवानन्द**

# ‘दिव्य दूत’

(‘शिवानन्द, दी मैसेंजर ऑफ़ पीस’ में से)

**परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज**

यह आत्मा सम्बन्धी ज्ञान ही है जो व्यक्ति को शाश्वत सन्तुष्टि अथवा ‘नित्य तृप्ति’ जो कि स्वरूप या मोक्ष ही है, की प्राप्ति में सहायक है। आत्मज्ञान के बिना मोक्ष असम्भव है और आत्मज्ञान की प्राप्ति उन दिव्य दूतों के बिना असम्भव है जो हमारे जीवन में प्रकाश लाने वाले हैं।

### आध्यात्मिक ज्ञान का पुनरुत्थान

बारम्बार दयनीय असन्तुलन की स्थिति से ग्रसित हो जाने वाले इस संसार में सन्तुलन एवं स्वस्थचित्तता लाने वाले इन दिव्य दूतों का गहन ऋण अतुलनीय है। जब भी वास्तविक ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान इस धरा से लुप्त होना आरम्भ हो कर विस्मृति के गर्त में प्रवृत्त होने लगता है, तभी ये दिव्य दूत उस ज्ञान का पुनरुत्थान करके अपनी निजी अन्तरानुभूति की शक्ति द्वारा पोषित कर देते हैं। व्यास भगवान् ने यदि प्रस्थान-त्रयी, अष्टादश पुराण और भागवत की रचना की तो केवल इसी उद्देश्य से ही। भारतवर्ष आज जैसा है, यह केवल विष्णु के अवतार, इन महर्षि व्यास तथा उनकी परम्परा के अन्य महान् ब्रह्मविद्या गुरुओं के कारण ही है। श्री अरविन्द तथा हमारे गुरुदेव जैसे दिव्य दूतों का जीवन लक्ष्य भी यहीद्धद्धअर्थात् उस दिव्य ज्ञानद्धद्धजो सृष्टि के आरम्भ में भगवान् ने स्वयं चतुर्मुख ब्रह्मा के मुख से दिया थाद्धद्धको पुनरुज्जीवित करना है। ये दिव्य दूत मानव को उसकी वास्तविक पैतृक सम्पत्ति के ज्ञान के प्रति जागरूक करने के आकांक्षी हैं।

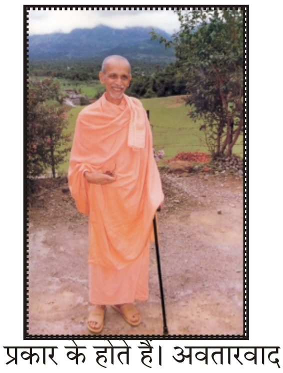

### अंश अवतार

महान् गुरु भगवान् के अवतार हैं। वे अंशावतार हैं। अवतार विभिन्न प्रकार के होते हैं। अवतारवाद, पुनर्अवतरण का विज्ञान है। ईश्वर के दश मुख्यावतारों के अतिरिक्त वे अंश रूप में भी प्रायः अवतरित होते हैं। **पूर्णावतार** भगवान् की सोलह कलाओं सहित अवतरित होते हैं; किन्तु **कलावतार** भगवान् की केवल एक कला से ही सम्पन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त **शक्ति अवतार** हैं जो भगवान् का कोई भी एक पहलू अभिव्यक्त करते हैं। कभी-कभी भगवान् किसी सामान्य व्यक्ति के मुख से कुछ समय के लिए प्रकटित हो कर बोलते हैं। इसे **आवेश अवतार** कहते हैं। इसके अतिरिक्त कई बार भगवान् किसी विग्रह विशेष में से विशिष्ट रूप में अवतरित होते भी देखे जाते हैं जैसे श्रीरंगम् के भगवान् रंगनाथ, दक्षिणेश्वर में

काली माँ, पण्ढरपुर के विट्ठल, उडुपि के कृष्ण तथा भद्राचलम् के रामचन्द्र। ये **अर्चावतार** हैं। और अन्तिम हैं वे महान् व्यक्ति, जो भगवान् के जीवन्त रूप हैं, वे हैं महान् सत्‌गुरु; उन्हें **अंशावतार** कहा जाता है।

अंशावतारों की भूमिका (उन करुणापूर्ण कार्यों, जो वे स्वभाववश करते रहते हैं, को छोड़ कर) ज्ञान की, आध्यात्मिक ज्ञान की तरंग को इस संसार में सजीव बनाये रखने की है। हम, भारतवर्ष की सन्तान का यह महान् सौभाग्य है कि एक भी शताब्दी ऐसी नहीं हुई है जिसमें हम ऐसे देव-पुरुषों द्वारा आशीर्वादित न हुए हों। उत्तरी भारत के परिव्राजक फ़कीर, महाराष्ट्र के सन्त, बंगाल के भक्तह्लह्लसभी ने अपने-अपने ढंग से ज्ञान की इस लहर को अपनी इस पावन धरा में अक्षुण्ण बनाये रखा है।

गुरुदेव के बिना हम उस आध्यात्मिक ज्ञान से वंचित ही रह गये होते, जो आज हमें उपलब्ध है। भले ही आप संस्कृत भाषा में प्रवीण क्यों न हों, तो भी प्रस्थान-त्रयी में निहित गूढ़ सत्यों को भलीभाँति समझ पाना सरल नहीं हैह्लह्लक्षर क्या है, अक्षर क्या है, पुरुषार्थ क्या है, इत्यादि इत्यादि। और गुरुदेव ने, जैसा कि आप सभी जानते हैं, प्रत्येक वस्तु का इस ढंग से वर्णन किया है कि सामान्य बुद्धि का व्यक्ति भी उसे भलीभाँति सरलता से समझ सकता है। इस प्रकार भगवान् अपने इन दिव्य दूतों द्वारा अपने उस ज्ञान को हम तक पुनः पहुँचा देते हैं जिन्हें हम विस्मृत करके खो बैठे होते हैं। सभी दिव्य दूतों ने पहले यही किया है, ज्ञानेश्वर ने अपनी अमर 'ज्ञानेश्वरी' में भगवद्‌गीता के उदात्त ज्ञान की व्याख्या की है। पोतना ने तेलगु भाषा में भागवत लिखी। रामायण को कम्बन ने तमिल में तथा तुलसीदास ने हिन्दी में पुनः लिखा। एकनाथ ने महाराष्ट्र को पुनः भागवत दी तथा निश्चलनाथ ने उत्तरी भारत को अपना सुप्रसिद्ध 'विचार सागर' दिया।

ये सब दिव्य दूत जिन्होंने हमें पुनर्शिक्षित करने के लिए, हममें दिव्य ज्ञान पुनः प्रकाशित करने के लिए अपने जीवन समर्पित कर दिये, इन्हें हम नश्वर प्राणी किस प्रकार अपनी पूजा समर्पित कर सकते हैं? केवल एकमात्र मार्ग, और वास्तव में सत्य मार्ग जिसके द्वारा हम उनकी कृपा प्राप्त कर सकते हैं, यह है कि इन देव-पुरुषों ने अपनी दिव्य करुणा-वश हमारे लिए जो पथ निर्धारित कर दिया है, हम उसका अनुसरण करें।

**(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)**

जगत् का अस्तित्व तुम्हारे विकास में सहायक होने के लिए है। ईश्वर की सृष्टि में जो-कुछ भी है तथा हमारे चारों ओर जो-कुछ है, केवल तुम ही चेतन-प्राणी के रूप में उसे अपने लिए सहायक या बाधक बनाते हो। तम्बाकू, शराब, जुए के अड्डे, नशीली दवाएँ, धन, कुसंगति कुछ भी हो, यह न हमें डराते हैं, न प्रेरित करते हैं, न इनका हमारे प्रति विद्वेष है। यह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ते। यह कुछ बिगाड़ भी नहीं सकते, उनके अन्दर वह शक्ति ही नहीं है। केवल हम ही अपनी शक्ति से उन्हें पालते-पोसते हैं।

एक को छोड़ कर लाख योनियों में गुजरने के बाद मानव-जीवन के रूप में ईश्वर की ओर से तुम्हें अति मूल्यवान् दुर्लभ उपहार प्राप्त हुआ है। अहंकार, स्वार्थ, भय, उत्सुकता, इच्छाएँ, ललक, शारीरिक रोग और इसी प्रकार की कष्टदायक स्थितियों में यह जन्म भी चुपचाप उसी रूप में तुम्हें नष्ट नहीं करना है।

गंगा के तीर पर खड़े हो कर जब तुम हर पल एक नयी नदी को देखा करते हो, तो तुम्हें लगता होगा कि तुम उसी नदी को देख रहे हो; पर जिस पानी को तुमने एक क्षण पहले देखा था, वह तो अब तक कहीं दूर चला गया है। तुम पूर्ण रूप से एक नयी नदी को देख रहे हो। ऐसे ही जीवन भी तीव्र गति से बहने वाली नदी के समान भागा जा रहा है। क्या हम अपना समय बेकार की गतिविधियों में व्यतीत कर देंगे? प्रत्येक जीवात्मा को उसके भौतिक जीवन के लिए ईश्वर ने जो निश्चित घड़ियाँ दी हैं, प्रत्येक आने-जाने वाली साँस के साथ उसका जीवन निःशेष हो रहा है। **स्वामी चिदानन्द**

# स्वामी शिवानन्द तथा आध्यात्मिक नवजागरण २

**परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज**

### इस दार्शनिक सन्त का जीवन-ध्येय

जीवन की सम्पूर्ण संरचना में निहित इस उल्लेखनीय कमी, इस रिक्तता तथा मानव की महत्त्वाकांक्षी आत्मा में इस त्रुटि को स्वामी शिवानन्द जी की सूक्ष्म दृष्टि ने देखा था। स्वामी जी के जीवन का ध्येय विश्व को एक ऐसी व्यापक दर्शन-पद्धति देने का रहा है जो दुराग्रही अनुभववाद की माँगों और उदात्त आदर्शवाद के सिद्धान्तों एवं उपदेशों (यथा 'केवल ब्रह्म ही सत्य है') में समन्वय तथा सन्तुलन स्थापित करती हो तथा जो पूर्णत्व-प्राप्ति हेतु बाह्य तथा आन्तरिक अनुशासन की संश्लिष्ट विधाओं की पद्धति प्रस्तुत करती हो। अध्यात्मवादी अद्वैतवाद की तत्त्वमीमांसा के सिद्धान्तह्नह्नकि ईश्वर के अतिरिक्त चरम सत्य कुछ नहीं हैह्नह्नके प्रति पूर्णतः विश्वस्त हो कर उसे स्वीकार करते हुए, उसके अनुभव की विस्मयकारक सत्यता में व्यक्तिगत रूप से प्रविष्ट होने के कारण श्री स्वामी शिवानन्द जी ने अज्ञानियों के विश्वास को बिना व्याघात पहुँचाये अथवा अस्त-व्यस्त किये तथा मानव-जीवन के प्रत्येक पक्ष को ध्यान में रख कर उन परिस्थितियों को विवेकपूर्वक सुलझाने की आवश्यकता अनुभव की, जिन परिस्थितियों से मानव-मन अन्तर्ग्रस्त रहता है। हम सिखा नहीं सकते कि अनुभूति-क्षेत्र का जीवन ही जीवन है या भौतिक शरीर और पार्थिव जगत् ही अद्वितीय सत्य को संघटित करते हैं; क्योंकि चिन्तनशील प्रवृत्ति से ये तथ्य उभरने लगते हैं कि मनस् भौतिक पदार्थ-तुल्य नहीं हो सकता या प्रेम और प्रसन्नता विद्युदणु (एलेक्ट्रोन्स) और अणु (प्रोटोन्स) की गतियों के अनुरूप ह्रस्व होना अस्वीकार करते हैं अथवा अज्ञात क्षेत्र तथा आध्यात्मिक मूल्यों के अनन्वेषित सत्य को जानने का दावा करने वाले और उनकी सत्ता को एवं अमरत्व जैसे तत्त्व की स्पष्ट सम्भावना घोषित करने वाले रहस्यवादियों तथा धार्मिक व्यक्तियों की अनन्त काल से चली आती अन्तहीन पुकार केवल रुग्ण जीवात्मा अथवा असामान्य प्रकृतियों के विकृत स्वर कह कर नहीं टाली जा सकती। मिथ्याभिमानी मानव इस असाधारण उपदेश से सन्तुष्ट नहीं होता कि विश्व नकारात्मक है; जिस सुख-दुःख का वह उपभोग कर रहा है, वह मात्र मोह-भ्रम है; जीवन चेतना का प्रलाप है; बहुमूल्य मान्यताएँ जो आग्रह और उत्सुकता से अत्यन्त सावधानीपूर्वक संचित की गयी थीं, जीवन की रुग्णता के विषाद के दीर्घ-स्वप्न में निमग्न, भ्रमित मन की व्यस्त क्रियाएँ हैं आदि। उसकी अन्वेषक अनुभूतियाँ तथा जिज्ञासु-बुद्धि तीव्र रूप से प्रतिवाद करती हैं कि वे जगत् को उतना ही कठोर, स्थूल तथा वास्तविक देखती हैं जितनी कि कोई वस्तु हो सकती है; कि शरीर के अपने सुख-दुःख की, जीवन के कर्तव्यों, दायित्वों, शोक-विषाद, विचित्रताओं तथा विशिष्ट अर्थवत्ता की किसी प्रकार के तर्क के बल पर उपेक्षा नहीं की जा सकती; अनुभव वास्तविक होता है, अतः कल्पना की खींचतान के द्वारा उसे महत्त्वहीन समझ कर निराकृत नहीं किया जा सकता; दृश्य वस्तु ही सत्य और मूल्यवान् है; क्योंकि प्रतिदिन के अनुभव द्वारा यह पर्याप्त रूप में परीक्षित है।

हम यह नहीं कह सकते कि ईश्वर ने जगत् की सृष्टि की है; क्योंकि ईश्वर में कोई इच्छा नहीं है जो उसे विश्व-सृजन के लिए प्रेरित करती। हम यह भी नहीं कह सकते कि विश्व प्रभु की लीला है; क्योंकि पूर्ण ब्रह्म को लीला की आवश्यकता नहीं होती। हम यह भी नहीं कह सकते कि विश्व का कोई मूलाधार नहीं है; क्योंकि भौतिक प्रकृति के परिवर्तनशील रूप तथा मानव की अन्तरात्मा की नैतिक माँगें निश्चित रूप से सिद्ध करती हैं कि सृष्टि-नियन्ता को होना ही चाहिए। **(अनूदित)**

# गुरु सर्वव्यापक भगवान् के रूप में

(एक जर्मन भक्त के, अपने गुरु स्वामी शिवानन्द जी की सर्वव्यापक शक्ति
एवं विद्यमानता सम्बन्धी अनुभव)

**शिवानन्द शारदा (फ्रॉ हेलर, जर्मनी)**

एक अदृश्य स्रोत से मुझे अपने ही कक्ष में एक आवाज़ सुनायी दी। इस अनुभव से मेरा हिमालय के शक्तिशाली योगी से सम्पर्क स्थापित हो गया और यह यहीं पर समाप्त नहीं हुआ।

१९५१ की क्रिसमस के दिन योगी शिवानन्द ने अपना विलक्षण दर्शन प्रदान किया। इन भारतीय सन्त को मैंने इतनी स्पष्टतया, इतने विशद रूप में और इतने स्पृश्यतया से देखा जैसा कि मैं अब अपनी मेज़ पर रखे हुए चित्र को देख रही हूँ। इस अनुभूति को अभी पन्दरह दिन भी नहीं हुए होंगे कि मेरे पति ने मुझे एक लिफाफा, हिमालय के योगी की योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी से भेजा हुआ, दिया।

उस लिफाफे में से मुझे गुरुदेव का हस्ताक्षरित चित्र मिला। यह चित्र मेरा जीवन-सहचर बन गया है; मैं कहीं भी जाऊँ, यह मेरे साथ रहता है। गुरुदेव के साथ मेरा सम्पर्क और उनमें मेरी रुचि दृढ़तर होती गयी। अपने मन-प्राण से और उनके साथ पत्रव्यवहार से मैं गुरुदेव की दिव्य उपस्थिति को सर्वत्र अनुभव करने लगी। पूरे तीन वर्ष मुझे पाँच सहस्र मील की दूरी से वह अदृश्य शक्ति तब तक प्रशिक्षण देती रही, जब तक कि मुझे भारत में अपने पावन आश्रम में पहुँचा नहीं दिया; जहाँ मैंने उन योगी के साक्षात् दर्शन प्राप्त किये।

आश्रम में मैंने अपने घर जैसा अपनत्व अनुभव किया तथा भले ही मैं उनकी सन्निधि में होती अथवा नहीं; किन्तु उनकी दिव्य उपस्थिति के मैं सदैव सम्पर्क में रहती थी, क्योंकि गुरुदेव मेरे लिए सर्वव्यापक सत्ता बन गये थे। आश्रम की प्रत्येक वस्तु में मुझे उनकी दिव्य उपस्थिति अत्यन्त स्पष्टतया से होने लगी। गंगा के स्वच्छ जल में, आश्रम के चतुर्दिक् भव्य पर्वत शृंखला में, और गुरुदेव के दर्शनों के लिए तथा उनकी पूजा करके नवजीवन प्राप्त करने के उद्देश्य से आने वाले विविध रंगों की पोशाकों में सजे-सँवरे हुए भक्त जनों मेंह्नह्नसभी के भीतर विद्यमान मैंने स्वामी शिवानन्द जी को देखा।

आश्रम में, मेरे सहित, प्रत्येक व्यक्ति अत्यन्त प्रसन्न दिखायी देता था। मैं गुरुदेव के अत्यन्त निकट बैठती तथा देखा करती कि वे कैसे भाव-समाधि में लीन हो जाते थे और कैसे एकदम साथ ही साथ स्वयं को दर्जनों कार्यों में व्यस्त कर लेते थे। उनकी दृष्टि से, कानों से अथवा हाथों से कुछ भी छिपा नहीं रह सकता था, और तो भी इसी के बीच ही वे अपने निज आत्म स्वरूप में गहनता पूर्वक लीन रहते थे। अपने इन दिव्य गुरु के साथ हुए मेरे निजी अनुभवों ने सिद्ध कर दिया है कि वे एक महान् सन्त, एक योगी, एक रहस्यवादी तथा वर्तमान युग के एक महान् मसीहा हैं।

गुरुदेव की प्रत्यक्ष सन्निधि तथा उनकी अदृश्य उपस्थिति समान रूप से अद्‌भुत थीं। गुरुदेव ने आनन्द और शान्ति मेरे भीतर तक भर दी। मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ, क्योंकि मेरे गुरुदेव ने वास्तविक आनन्द का ज्ञान मुझे प्रदान किया है। स्वामी शिवानन्द एक ऐसे विश्वगुरु हैं जो चारों ओर से लोगों द्वारा घिरे रहते हैं और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पूजित हैं।

स्वामी शिवानन्द जी के शिष्यों और भक्तों के सम्पर्क में आना मेरे लिए अथाह प्रसन्नता का विषय है। ऐसे महान् योगी का कोई भी शिष्य सैकड़ों प्रकार से गुरु के सर्वोत्तम आशीर्वाद

और कृपा प्राप्त करने से वंचित नहीं रहता। रात्रि के समय (अर्थात् कष्ट के समय) उनकी कृपा अचानक प्राप्त हो जाती है। उनकी दिव्य उपस्थिति सदैव हमारी रक्षा करती और हमें निर्दिष्ट करती है। मुझे दृढ़ निश्चय है कि स्वामी शिवानन्द जी जैसे गुरु अपने शिष्य के सदा साथ रहते हैं, भले ही वह कहीं भी हों! गुरुदेव केवल यह देखते हैं कि हम अपने मन और विचारों में सदैव उनके साथ सम्पर्क बनाये रखते हैं या नहीं। शिष्य को केवल इतना करना है कि अपने अहंपूर्ण स्वभाव को एक ओर हटा कर गुरु की कृपा के प्रवाह के प्रति ग्रहणशील रहे। आश्रम में सभी शिष्यों को गुरुदेव में दृढ़ विश्वास है। शिष्यों की परीक्षा लेने का उनका अपना ढंग है। सभी शिष्य स्वेच्छा पूर्वक उनके प्रति समर्पित हैं। योगी एवं रहस्यवादी गुरुदेव शिवानन्द मेरी सदैव सहायता करेंगे। ऋषिकेश में गुरुदेव का आश्रम मेरे लिए अब अन्तर्जगत् बन चुका है : यह मुझे आध्यात्मिक पोषण एवं आश्रय प्रदान करता है। हमारे गुरुदेव के आशीर्वाद हम सब पर हों!

**(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)**

## भगवत्साक्षात्कार

राजा जनक ने पलक मारते भगवत्साक्षात्कार कर लिया। राजा खट्वांग ने एक मुहूर्त में, राजा परीक्षित ने एक सप्ताह में और स्वामी रामतीर्थ ने दो वर्ष में भगवत्साक्षात्कार कर लिया था।

भगवत्साक्षात्कार कुछ कठिन नहीं है। यह बहुत ही सरल है। यह तर्कशास्त्र या गणित सीखने से भी अधिक सरल है। जहाँ आपने एक बार मन को संयत कर लिया और लक्ष्य पर इसे टिका दिया, यह वहाँ चुपचाप पड़ा रहेगा।

मन तो बहुत भला साथी है। आप जिस तरह इसे शिक्षित करेंगे, यह वैसे ही आपका अनुगामी बनेगा। यह बहुत ही सहयोगशील तथा आज्ञाकारी सेवक है। ध्यान से बढ़ कर तो आनन्ददायी कुछ है ही नहीं। यहाँ तो सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है। यहाँ सब सुख ही सुख है। आपको दृढ़ निश्चय के साथ ध्यान आरम्भ करना चाहिए।

श्री अरविन्द, रमण महर्षि, सिद्धारूढ़ जैसे महात्माओं के जीवन-चरित्रों से प्रेरणा लीजिए। कितने ही उत्तम कोटि के साधक हैं, शिक्षित आचारवान् संन्यासी हैं। उनके साथ रह कर अपनी शंका का निवारण कीजिए। उनसे विधि सीखिए। बुद्धि तथा विवेक से आत्मा को, ब्रह्म को जानिए। निदिध्यासन कीजिए। श्रद्धा-रूपी पताका को लहराते हुए, वैराग्य-रूपी शस्त्रास्त्रों से सज्जित हो कर, प्रणवोच्चार का बिगुल बजाते हुए निदिध्यासन की ब्रह्मभूमि में साहसपूर्वक प्रवेश कीजिए। आप ब्रह्मसाक्षात्कार-रूपी भव्य विजय को प्राप्त करेंगे। आयास कीजिए। जागिए, उठिए और लक्ष्य-प्राप्ति तक विराम न लीजिए। यदि आपकी साधना सच्ची है तो आप दो-तीन वर्षों में साक्षात्कार कर लेंगे।

**स्वामी शिवानन्द**

# मेरे जीवन का 'परिवर्तन-बिन्दु'

**श्री जगन्नाथ प्रसाद सत्तन, एम. ए., एल-एल. बी.**

एक दिन मैं अत्यन्त उदास, निराश एवं हताश मन से बैठा था और मेरे चारों ओर निराशा का गहरा अन्धकार छाया हुआ था। मैं इस लौकिक जीवन की निस्सारता पर, इसके दुःख, दर्द और कष्टों पर चिन्तन कर रहा था। दीर्घकालीन बीमारी के कारण मेरी नौकरी छूट चुकी थी और लोग मुझे निकम्मा आदमी समझने लगे थे। इसी समय में मुझे डा. चाऊ ने 'लाइट, पॉवर एण्ड विज़डम' (ज्योति, शक्ति और प्रज्ञा) नामक पुस्तक दी।

इस पुस्तक में मुझे मानवता के वास्तविक जीवन के तथ्य उपलब्ध हुए। यह उन सबका सार-तत्त्व है जिसकी व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यकता होती है। धरा पर साक्षात् परमात्मा के स्वरूप परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के श्रीमुख से निःसृत निर्देश इस पुस्तक में हैं। उच्चतम दार्शनिक विषयों तथा धार्मिक तथ्यों का वर्णन करने वाली यह पुस्तक कला और साहित्य की कृति तो है ही, साथ ही यह आपको दैनिक जीवन जीने की विशेष कला भी सिखाती है।

स्वामी शिवानन्द जी कहते हैं, कि परमात्म-साक्षात्कार करना बहुत अधिक कठिन कार्य नहीं है, कि प्रत्येक आदमी, भले ही वह किसी भी जाति या धर्म का हो, ईश्वर-साक्षात्कार कर सकता है। स्वामी जी का कथन है कि इसी संसार में और इसी जीवन में हम ब्रह्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं, इसके लिए हमें किसी दूसरे जन्म की अथवा दूसरे लोक में जाने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। स्वामी जी का मानना है कि इसके लिए कठोर तपस्या की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए व्यक्ति को वन में अथवा बदरी और केदार में या हिमालय की कन्दराओं में जाने की भी आवश्यकता नहीं है। अपने ही घर में, सांसारिक जीवन और सुख-सुविधाओं का त्याग किये बिना भी व्यक्ति भगवान् को पा सकता है। स्वामी शिवानन्द जी कहते हैं कि योग के पथ पर आरूढ़ होने के लिए कर्म और वाणी में संयम की आवश्यकता है। वे केवल यह चाहते हैं कि हम **सेवा, भक्ति, दान** और चित्त की **शुद्धता** के साथ ध्यान करें और **साक्षात्कार** प्राप्त कर लें।

मैंने श्री स्वामी शिवानन्द जी को पत्र लिखा और एक सप्ताह के बीच में ही मुझे उनका उत्तर मिल गया। किन्तु यह केवल पत्र का उत्तर मात्र ही नहीं था। मेरे लिए यह एक पावन सद्ग्रन्थ से भी बढ़ कर था। अपने जीवन में मैंने इससे पूर्व कभी भी ऐसी कृति देखी नहीं थी, कभी मेरे चिन्तन में भी ऐसी कोई वस्तु नहीं आयी थी जो इतना अधिक प्रेम, अपनत्व और करुणा प्रदान करने वाली हो। केवल भगवान् ही अपने भक्तों को इस प्रकार सम्बोधित कर सकते हैं। निश्चय ही वे मानव-देह में भगवान् ही हैं। उन्होंने मेरे लिए प्रार्थनाएँ करवायीं और मुझे खोया हुआ सब-कुछ अपने जीवन में पुनः प्राप्त हो गयाह्नह्ननौकरी, आशा, अच्छा स्वास्थ्य और प्रसन्नताह्नह्नसब-कुछ।

मुझे स्वामी शिवानन्द जी का साहित्य तथा अन्य सद्ग्रन्थ पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरी आँखें खुल गयीं। मैंने नये सिरे से जीवन आरम्भ किया। गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी की कृपा से अब मुझे ज्ञान हो गया है तथा मुझमें अपने जीवन की कमियों पर विजय पाने और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के लिए दृढ़ निश्चय प्राप्त हो गया है। जो मानव-सेवार्थ कार्य करने में लगे हुए लोग हैं, मैंने उनके साथ मिल कर कार्य करना आरम्भ कर दिया है। मैं डा. चाऊ तथा परम आराधनीय गुरुदेव का धन्यवादी हूँ कि उन्होंने मुझे मानवता की सेवा करने का तथा दिव्य जीवन के सन्देश को द्वार-द्वार तक पहुँचाने का सुअवसर दिया।

**(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)**

# शिवानन्द-विजय ५

''आपके अन्तर्तम में एक आवाज है जो कहती है : मैं शुद्ध चैतन्य ब्रह्म हूँ। अब इसे सुनें।''

**श्री सुन्दरश्याम 'मुकुट'**

**अंक १**

दृश्य ४ और ५ (सारांश)

*इस दृश्य में शिवानन्द जी के माता-पिता श्रीमती पार्वती अम्माल एव श्री वेंगु अय्यर दिखाये गये हैं। वे परस्पर अपने सुपुत्र के विषय में वार्तालाप कर रहे हैं तथा श्री वेंगु अय्यर अपनी धर्मपत्नी को अपने इस दृढ़-विश्वास के सम्बन्ध में बताते हैं कि कुप्पुस्वामि का आगमन, उनके पूर्वज श्री अप्पय्य दीक्षितार को भगवान् शिव द्वारा दिये गये वचन की पूर्ति के रूप में हुआ है। इसका अनुमान उन्हें नन्हें बालक की विलक्षण एवं अकाल-परिपक्वता को देखते हुए हुआ है, जिसके सभी कार्य एवं गतिविधियाँ उसको इस पीढ़ी की विशिष्ट आध्यात्मिक प्रतिभा होने का संकेत देती हैं। वे दोनों सर्वशक्तिमान् परमात्मा के चरणों में अत्यन्त श्रद्धाभक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं।*

## पहला अंक

।। दृश्य ६ ।।

**दृश्य** : स्थानीय पुस्तकालय का मुख्य अध्ययन-कक्ष। कक्ष के बीचोंबीच चार बड़ी मेज़ें लगी हैं, जिन पर सभी प्रकार के समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ फैली हुई हैं। दीवारों के साथ बहुत-सी अल्मारियाँ एक-दूसरे से सटी हुई रखी हैं, जिनमें अत्यन्त सुव्यवस्थित ढंग से पुस्तकें भरी हुई हैं। बहुत से लड़कों ने समाचारपत्रों की मेज़ों को घेरा हुआ है और सभी परीक्षा-परिणाम की सूची में अपना नम्बर खोज रहे हैं।

**समय** : प्रातः

**पहला**ह्हदेखा, इसे कहते हैं भाग्य! इस वर्ष सारे प्रान्त में वी. पी. कुप्पुस्वामि ही प्रथम आया है।

**दूसरा**ह्हअरे भैया! यह कोई नयी बात थोड़े ही है। हम तो आरम्भ से ही ऐसा देखते चले आ रहे हैं। ऐसा भाग्य भी किसी-किसी का होता है।

**पहला**ह्हठीक है, उस दिन गवर्नर साहब के हाथ से दिया हुआ स्वर्णपदक क्या कोई साधारण बात थी?

**दूसरा**ह्हऔर इस बार भी तो मद्रास के वाईस-चांसलर ही उसे स्वर्णपदक प्रदान करेंगे।

**पहला**ह्हतभी तो कहता हूँ, हम-तुम दुनिया में क्यों आये?

**दूसरा**ह्हफेल होने के लिए, मेरे भाई!

**पहला**ह्हजी चाहता है नदी में कूद जाऊँ।

**दूसरा**ह्हअजी, आजकल तो नदी भी सूख गयी है।

**पहला**ह्हतो कोई तालाब ही सही।

**दूसरा**ह्हउँह, तालाब का पानी भी सड़ गया है, बदबू आयेगी।

**पहला** तो फिर क्या करूँ?

**दूसरा**ह्हमैं बताऊँ। (सोच कर) चलो, हम दोनों नाटक कम्पनी में भरती हो जायें।

**पहला**ह्नह्नवहाँ भरती हो कर क्या करेंगे?

**दूसरा**ह्नह्नमैं कविता लिखा करूँगा, तुम गाया करना।

**पहला**ह्नह्नहै तो ठीक, पर मैं गाना तो जानता नहीं।

**दूसरा**ह्नह्नकुप्पुस्वामि से सीख लो। देखते नहीं, उस दिन उन्होंने हेलेन आफ एथेन्स का पार्ट करते हुए कितना दर्द-भरा गाना गाया था। मैंने तो ऐसी सुरीली आवाज कभी नहीं सुनी। बस, कलेजा पकड़ते ही बना।

**पहला**ह्नह्नमुझसे सच पूछो तो बात ही यह है कि उनके उस गाने के कारण ही आज मैं फेल हो गया, क्योंकि दिन-रात उसकी लय निकालने में परिश्रम करता रहा। धत तेरे की, अब तक भी सफल नहीं हो सका। ना भाई, एक गाने से तो मेरा यह हाल हुआ अब दूसरा न सुनवाओ।

**दूसरा**ह्नह्नअच्छा, तो नाटक कम्पनी का विचार छोड़ दो।

**पहला**ह्नह्नयह लो, छोड़ दिया।

**दूसरा** (सोच कर) मैं बताऊँ, तुम वैद्य बन जाओ। आजकल वैद्यक की डिग्रियाँ बड़ी सस्ती मिलती हैं। कुल पाँच रुपये ही तो लगेंगे।

**पहला**ह्नह्नहूँ, बन तो जाता, पर सुना है कुप्पुस्वामि डाक्टरी पढ़ने के लिए जा रहे हैं। भला, उनके सामने मेरी क्या दाल गलेगी?

**दूसरा**ह्नह्नअरे, जब तक वे पढ़ कर आयेंगे, तब तक काम चल ही जायेगाह्नह्नफिर देख लेंगे।

**पहला**ह्नह्नना भाई! मैं यदि वैद्य की जगह कम्पाउंडर बनूँ तो अच्छा है।

**दूसरा**ह्नह्नतुम्हारी मरजी, मैं तो कह चुका। अच्छा एक कविता सुनो।

**पहला**ह्नह्नजी तो नहीं करता, पर सुना दो।

**दूसरा**ह्नह्न(खाँस कर)

सुनो-सुनो तुम मेरी बात। चलते-फिरते हैं दिन-रात।।
थकते नहीं अरे हम तात। लगा रहे हैं कैसी घात।।
खा सकते हैं किससे मात। नहीं हमारी कच्ची धात।।
देखो कितना कोमल गात। सही भला कब हमने लात।।
फेल सदा होते हैं तात। साल हुए हैं पूरे सात।।

(हँसते हुए) कहो, कैसी कविता रही?

**पहला**ह्नह्न(गर्दन हिलाते हुए) वाह, क्या कहने हैं! पर तुमने गाया क्या, वह तो सुना ही नहीं।

**दूसरा**ह्नह्नतो सुना क्या, पत्थर?

**पहला**ह्नह्नअजी, यह देख रहा था कि यह कौन-सा राग है?

**दूसरा**ह्नह्नयह उकड़ूँ राग है मेहरबान।

**पहला**ह्नह्नओह, यह तो भूल ही गया हूँ, अच्छा एक बार फिर सुनाओह्नह्नलो, उकड़ूँ बैठ जाता हूँ, अब आनन्द आयेगा।

**दूसरा** ह्नबस महाराज रहने दो। बार-बार मेरी कविता देवी कष्ट नहीं उठाती। लो मैं चला।

**पहला**ह्नह्ननहीं-नहीं, मैं तुम्हारे पैर पकड़ता हूँ, सुना दो।

**दूसरा**ह्नह्नउँहूँ (भाग जाता है)

**पहला**ह्नह्नबच कर कहाँ जाओगे। मैं भी तो अपनी माँ का एक ही लाल हूँ।

(पीछे-पीछे जाता है)

(पट-परिवर्तन) **(क्रमशः)**

दिव्य जीवन व्यतीत करने के लिए किसी घर, परिवार, व्यापार को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। केवल उसे अपने अहंकार के इस गलत विचार कि 'मैं यह हूँ, मैं वह व्यक्ति हूँ' का त्याग करना है। अपने जीवन को दिव्य बनाने के लिए बाह्य परिवर्तन के स्थान पर आन्तरिक परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। **स्वामी चिदानन्द**

***बाल-स्तम्भ :***

# मोटी आंटी ५

**स्वामी रामराज्यम्**

(बच्चो, इस धारावाहिक कहानी में तुम पढ़ रहे हो मोटी आंटी के जीवन से जुड़े हुए कुछ प्रेरक प्रसंग। प्रत्येक प्रसंग एक मोती की तरह है, जो मन की पिटारी में सँभाल कर रखने योग्य है। इन मोतियों का धन तुम्हारी जीवन-यात्रा में बहुत काम आयेगा।)

## ५. बुरके वाली आंटी

एक दिन सबेरे-सबेरे मोटी आंटी ने मुझसे कहाह्नह्न''तुम बड़ी मसजिद जाओ। वहाँ के मुल्ला जी को मेरी चिट्ठी दे देना।'' फिर उन्होंने मुझसे चिट्ठी लिखवायी :

''कल रमजान के महीने का आखिरी दिन ईद था। आप सबने ईद की खुशियाँ मनायीं। मेरी इच्छा है कि आप अपने इष्ट-मित्रों के साथ आज शाम पाँच बजे मेरे घर आयें और मुझे भी ईद की खुशी मनाने का मौका दें। मसजिद के पास जो यतीमखाना[1] है, वहाँ के मौलाना साहब को भी जरूर लायें। मेरी एक सहेली नूरजहाँ आप सबका स्वागत करेगी। मैं आफिस से पन्द्रह मिनट देर से पहुँचूँगी।''

''यह आपकी सहेली नूरजहाँ कौन हैं?'' मैंने पूछा।

उन्होंने अपने मुँह पर उँगली रख कर मुझसे चुप रहने को कहा। बोलींह्नह्न''आज के दिन तुम दोनों बच्चे मुझसे कोई सवाल नहीं पूछोगे।''

मेरे सवाल का यह कैसा जवाब! मैं सोचता रह गया।

इसके बाद चिट्ठी ले कर मैं मसजिद चला गया। एक-दो बार मैं मोटी आंटी के साथ मसजिद जा चुका था। मसजिद के मुल्ला जी मोटी आंटी को जानते थे। मुल्ला जी को मैंने चिट्ठी दी। चिट्ठी पढ़ कर वह बहुत खुश हुए। बोलेह्नह्न''हम जरूर आयेंगे। मौलाना साहब को भी लायेंगे। आंटी से कह देना कि आठ-दस लोग मेरे साथ आयेंगे।''

मोटी आंटी उस दिन आफिस नहीं गयीं। मैं सोच रहा थाह्नह्नउन्होंने तो चिट्ठी में लिखवाया था कि वह पन्द्रह मिनट देर से आफिस से लौटेंगी! यह आश्चर्य की बात थी। मैं यह बात पूछता कैसे? उन्होंने कुछ भी पूछने के लिए मना कर रखा था।

मोटी आंटी ने उस दिन ढेर-सी सेवईं बनायीं। और भी तरह-तरह के पकवान बनाये।

शाम पाँच बजे से कुछ पहले उन्होंने मुझे और गुल को अपने पास बुलाया और बोलींह्नह्न''देखो, मैं मेहमानों के सामने एक नाटक करूँगी। यह नाटक तुम कमरे के अन्दर से देखना, ड्राइंग रूम में बैठ कर नहीं। मेरे इशारा करने पर ही तुम लोग ड्राइंग रूम में आना।''

नाटक! यह तो और भी आश्चर्य की बात थी।

फिर उन्होंने सन्दूक से एक काला बुरका निकाला और उसे पहन लिया।

हम दोनों बच्चे आँखें फाड़े यह दृश्य देख रहे थे। कुछ पूछ तो सकते नहीं थेह्नह्नबस, मोटी आंटी की ओर देखे जा रहे थे।

---

[1] अनाथालय

पाँच बज गये। मेहमानों ने आना शुरू कर दिया। मोटी आंटी के आफिस का एक आदमी मेहमानों का स्वागत करने के लिए मकान के गेट पर खड़ा था। आदरपूर्वक वह उन्हें ड्राइंग रूम में लाता था और वहाँ पड़ी कुरसियों पर बिठलाता था।

मोटी आंटी ने इशारे से हम बच्चों को कमरे में ही रहने के लिए कहा। फिर वह बुरका पहने हुए ड्राइंग रूम में आयीं। सारे मेहमान उठ खड़े हुए। मोटी आंटी ने थोड़ा झुक कर हाथ जोड़े और उन्हें बैठने के लिए इशारा किया।

एक मेहमान ने पूछाह्नह्व''आप ही आंटी की सहेली नूरजहाँ हैं?''

मोटी आंटी ने सिर हिला कर 'हाँ' कर दिया।

मैं और गुल कमरे के अन्दर से यह नाटक देख रहे थे।

फिर मोटी आंटी किचिन में गयीं। वहाँ से वह एक बड़े-से बरतन में सेवईं भर कर ले आयीं और उसे एक कोने में रखी हुई डाइनिंग टेबिल पर रख दिया। गेट पर खड़े अपने आफिस के आदमी को उन्होंने इशारे से बुलाया। डाइनिंग टेबिल पर पहले से रखे हुए बाउलों[2] में सेवईं भर-भर कर उसने मेहमानों को देना शुरू कर दिया।

एक मेहमान ने पूछाह्नह्व''आंटी अभी तक आफिस से नहीं आयीं?''

जवाब उस आदमी ने दियाह्नह्व''वह आती ही होंगी।''

एक मेहमान ने कहाह्नह्व''फोन करके पूछिए कि आंटी कब तक आ रही हैं। हम लोग उनके आने पर ही खाना शुरू करेंगे। बिना मेजबान के हम कैसे खायेंगे?''

मोटी आंटी ने पीछे मुड़ कर हम दोनों बच्चों को ड्राइंग रूम में आने का इशारा किया। हम ड्राइंग रूम में आ गये। फिर तेजी से उन्होंने चेहरे को ढकने वाले बुरके के कपड़े को हटा दिया।

मेहमानों ने जोर से ठहाका लगाया। हँसते हुए मोटी आंटी ने ताली बजायी। मेहमानों ने भी ताली बजा कर जवाब दिया।

हम दोनों बच्चे खूब हँसे। गुल तो लोट-पोट हुई जा रही थी।

हँसते हुए मोटी आंटी हाथ जोड़ कर कहने लगीह्नह्व''नूरजहाँ चली गयी। अब मोटी आंटी आपकी खिदमत में हाजिर[3] है। आप सब आये। मैं आपकी बहुत शुक्रगुजार[4] हूँ।''

फिर मोटी आंटी किचिन से दूसरी डिशों५ को ले आयीं।

हम दोनों बच्चे दौड़-दौड़ कर सेवईं और डिशें परोसने लगे।

मुल्ला जी ने मुस्कराते हुए कहाह्नह्व''हमने जिन्दगी में पहली बार ईद की खुशी इस तरह के जोरदार ठहाकों से मनायी है।''

मोटी आंटी कहने लगींह्नह्व''खुशी खुशी होती है। वह सबकी होती है। वह एक की या दूसरे की नहीं होती। कल आपने ईद की खुशी मनायी। इस खुशी में मुझे भी खुश होना चाहिए। मैंने आपको यहाँ आने की तकलीफ़ दी ताकि आपके चेहरों पर ईद मनाने की खुशी देख कर मैं भी खुश हो लूँ। दूसरों की खुशी में खुश होना एक अच्छी बात है।''

यह बात सुन कर मेहमानों ने जोर से ताली बजायी।

मोटी आंटी बोलींह्नह्व''मुझे कुछ और भी कहना है। मैंने सुना है कि इसलाम धर्म में जकात यानी दान देने का बहुत महत्त्व होता है। केवल रुपये-पैसों का ही दान नहीं होता। दूसरों की जरूरतें पूरी करना, दूसरों की भलाई करना, दूसरों के दुःख दूर करना, दूसरों के लिए उदार बनना भी दान ही हैं। मैं मसजिद के पास चल रहे यतीमखाना के लिए कुछ दान

---

[2] कटोरों, [3] सेवा में उपस्थित, [4] कृतज्ञ, [5] पकवान

करना चाहती हूँ। आप जिस मकान में बैठे हैं, उसकी ऊपरी मंजिल कुछ महीनों में बन कर तैयार हो जायेगी। इस समय यतीमखाना के पास जगह की कमी है। मैं समूची मंजिल को यतीमखाना को दान में देती हूँ। यतीमखाना के मौलना साहब मेरे इस दान को कबूल[6] करें।''

मेहमानों ने दोबारा ताली बजायी।

मोटी आंटी ने कहा—''बस, एक आखिरी बात। आप सबने रमजान के महीने में खुदा की खूब इबादत[7] की होगी। जाते-जाते आप हमें यह दुआ[8] दे कर जायें कि खुदा की इबादत में हम भी अपनी जिन्दगी गुजारें।''

खा-पी कर मेहमान चले गये।

बुरका पहने हुए मोटी आंटी बहुत विचित्र लग रही थीं। गुल उनसे चिपट कर बोली—

''अब मैं आपको बुरके वाली आंटी कह कर पुकारा करूँगी।''

**(क्रमशः)**

## साधन-चतुष्टय

साधक में विवेक, वैराग्य, षट्-सम्पत् और मुमुक्षुत्व—ये चार प्रकार के गुण होने चाहिए। इन्हें साधन-चतुष्टय कहते हैं। आत्मा-अनात्मा, सत्-असत्, नित्य-अनित्य, परिणामी-अपरिणामी, दृक्-दृश्य के भेद को समझना विवेक है। निष्काम कर्म के परिणाम-स्वरूप शुद्ध हृदय में विवेक जागता है।

इस लोक से ले कर परलोक-पर्यन्त सभी प्रकार के सुखों से उदासीनता वैराग्य है। विवेकपूर्ण वैराग्य की आवश्यकता है जो **'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः'** (ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या है। जीव ब्रह्म ही है, ब्रह्म से पृथक् नहीं है) के विवेक के फल-स्वरूप प्राप्त होता है। इस प्रकार का वैराग्य ही साधक की वास्तविक सहायता कर सकता है। **'वैराग्यस्य फलं बोधं बोधस्य उपरतिः फलम्'**—वैराग्य का फल बोध (ब्रह्मज्ञान) है और बोध का फल उपरति है। इस अवस्था में इन्द्रिय-रति की लवलेश इच्छा भी नहीं रहती है। अतीत की इन्द्रिय-रति की स्मृति भी नहीं रहती है। मृदु, मध्यम, अधिमात्र और पर नामक चार प्रकार के वैराग्य हैं। पर-वैराग्य ब्रह्मज्ञान के अनन्तर उत्पन्न होता है।

शम (मन की शान्ति), दम (इन्द्रिय-निग्रह), तितिक्षा (सहनशीलता), उपरति (परितृप्ति), समाधान (मन का स्थिरीकरण) और श्रद्धा (गुरु-शास्त्र-वाक्यों में निष्ठा)—ये छह गुण मिल कर षट्सम्पत् कहलाते हैं।

इस असार संसार से मुक्त हो जाने की अत्यन्त तीव्र इच्छा मुमुक्षुत्व है।

**स्वामी शिवानन्द**

---

[6] स्वीकार, [7] पूजा, [8] आशीर्वाद

# सबसे बड़ा गुप्त शत्रु : अहंकार

**परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज**

१. मनुष्य का प्रधान शत्रु उसके भीतर ही है। वह अहंकार है।

२. अहंकार मन के साथ रहता है। जब मन नष्ट हो जाता है, तब अहंकार भी नष्ट हो जाता है।

३. चित्त उपचेतन मन है। यह स्मृति का भण्डार है। संस्कार यहीं गड़े हुए हैं। इस अन्तःकरण के चार भाग हैंह्नह्नमन, बुद्धि, चित्त और अहंकार।

४. मन वायु तन्मात्रा से निर्मित है। अतः यह वायु के समान ही चपल है। बुद्धि अग्नि से उत्पन्न है, चित्त जल से तथा अहंकार पृथ्वी से बना है।

५. अहंकार में बन्धन है। निरभिमानता में ही मुक्ति है।

६. सारे महान् भूतों के पीछे अहंकार ही है।

७. यदि अहंकार नहीं है, यदि मन कामना तथा राग-द्वेष से मुक्त है, तो आप पुनः इस जन्म-मृत्युशील जगत् में प्रवेश नहीं करेंगे।

८. अहंकार ही ईश्वर तथा आत्मा के बीच का आवरण है।

९. अहंकार के विलीन हो जाने पर विश्वात्म-चैतन्य का साक्षात्कार होता है।

१०. अहंकार अथवा अहन्ता बहुत ही भयंकर बीमारी है। यह आपको ईश्वर से तथा मानव-समाज से अलग करती है।

११. अहंकार ही जीवन के शोक तथा संसार की विपत्तियों का कारण है। विवेक, आत्म-विचार तथा समाधि के द्वारा इस अहंकार को भस्म कर डालिए। आप अमर शाश्वत सुख का उपभोग करेंगे।

१२. अपने महान् शत्रु अहंकार को आत्म-त्याग, आत्मार्पण, आत्म-निषेध, सेवा, नम्रता, प्रार्थना, पूजा तथा आत्म-साक्षात्कार के द्वारा मार डालिए।

१३. मन का निरीक्षण कीजिए।

१४. मन आत्मा का हनन करने वाला है। विवेक-खड्ग से इस मन को निर्ममतापूर्वक मार डालिए।

१५. महत्ता एवं लघुता की भावना अहंकार में ही गड़ी हुई है।

१६. भय, काम, क्रोध, लोभ, घृणा, ईर्ष्याह्नह्नये मलिन मन के लक्षण हैं।

१७. मन के जागरण के साथ अद्वैत-भावना भी जगती है। द्वैत ही अज्ञान है। द्वैत से भय, काम आदि की उत्पत्ति होती है।

१८. इन्द्रिय तथा मन को श्रान्त कर आप ईश्वर से मिलिए। आप नित्य शान्ति का आनन्द प्राप्त करेंगे।

१९. मन ऊधम मचाने वाले बन्दर के समान है। इस बन्दर को अपनी ताकत-भर ऊधम मचाने दीजिए। प्रतीक्षा कीजिए तथा देखिए। इसे थोड़ी लगाम लगाइए। नियमित ध्यान कीजिए। मन की अशान्ति दिन-प्रति-दिन कम होती जायेगी।

२०. वही वास्तव में बलवान् है, जिसने मन अथवा निम्न आत्मा पर विजय प्राप्त कर ली है।

२१. जो मन पर विजय प्राप्त करता है, वह सबसे बड़ा विजेता है।

**(अनुवादक : श्री स्वामी ज्योतिर्मयानन्द सरस्वती)**

# समाचार और प्रतिवेदन

## मुख्यालय के समाचार

### शिवानन्द होम द्वारा सेवा

''शिवानन्द होम ऐसे लोगों की प्रेमपूर्ण देख-रेख का केन्द्र है जो एकाकी अकिंचन और मरणासन्न स्थिति में सड़क के किनारे पाये जाते हैं, जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है।'' (स्वामी चिदानन्द) ऐसे आवास-विहीन लोग जो अस्थायी अथवा स्थायी रूप से रोगग्रस्त हो जाते हैं, गुम जाते हैं अथवा घर से निष्कासित कर दिये जाते हैं, की 'होम' द्वारा देख-रेख की जाती है।

इस माह नये भरती होने वाले रोगियों में एक प्रौढ़ महिला हैं। एक दिन बहुत सुबह वह सड़क के किनारे मोटे-मोटे कपड़ों और कम्बलों में लिपटी हुई पायी गयी थी, उसका पूरा शरीर कड़ाके की सर्दी के कारण पूरी तरह से मानो जम सा गया था। पहले-पहले तो ऐसा लगा कि वह अच्छे स्वस्थ शरीर की है, किन्तु जब स्नान के लिए उसके एक-एक करके वस्त्र उतारे गये तो एक अत्यन्त क्षीण काया अत्यधिक निर्जलता से ग्रसित पायी गयी। उसने बताया कि वह ऊपर के पर्वतीय क्षेत्र से आयी है, किन्तु ऋषिकेश कैसे पहुँच गयी, यह बता सकने में वह असमर्थ रही। वह अत्यन्त भयभीत और शंकालु दृष्टि से देख रही थी कि वह कहाँ पहुँच गयी है तथा अपना नाम तक बताने में संकोच कर रही थी।

अन्य एक और जो महिला रोगिणी भरती की गयी है, वह बहुत लम्बे समय से सड़क के किनारे ही रह रही थी, उसके दोनों हाथों और पाँव पर घाव थे तथा कुष्ठरोग से ग्रसित शरीर के कई अंग कुरूप हो चुके थे। जब उससे नाम पूछा गया तो उसका उत्तर स्तब्ध कर देने वाला था। उसने कहा, 'मैं भिखारिन हूँ, मेरा नाम भिखारिन है।''

तीसरी भरती भी एक महिला रोगिणी की है, जो अत्यन्त वृद्धा है। वह तो शब्दों का भलीभाँति उच्चारण करने में भी असमर्थ थी। लगभग ८० वर्ष से अधिक ही उसकी आयु होगी। वह सड़क पर केवल एक महीन शॉल और फटी धोती में मिली थी।

अनेकों लोग वर्षों पर्यन्त सड़कों पर ही रहते पाये जाते हैं; वे दूसरे लोगों की भलाई और दया पर आश्रित रहते हुए अत्यन्त कठिनाइयों और संघर्षों से पूर्ण एकाकी जीवन जीते हैं। परिस्थितियों के वश में पड़े हुए ये लोग सभी मुसीबतों के बीत जाने की आशा मन में सँजोए दुर्भाग्य के इस दुष्ट-चक्र से निकल सकने में स्वयं को असमर्थ ही पाते हैं। ऐसे लोगों की 'होम' में भरती, ऐसे स्थान में, जहाँ दूसरे लोगों के संग भ्रातृभावना से इकट्ठे रहना और स्वच्छता के नियमों का पालन कर सकना उपलब्ध होता है, मानो ईश्वर प्रदत्त वरदान ही है। प्रारम्भ में उन्हें यद्यपि यह अनुशासन कठिन प्रतीत होता हो, किन्तु धीरे-धीरे व्यक्ति में आत्मविश्वास आने लगता है, विश्वास जमना आरम्भ हो जाता है तथा वह अपने साथियों से, इसे नये परिवार के सदस्यों से वार्तालाप प्रारम्भ कर देता है और अमर पक्षी की भाँति गत जीवन की यादें स्मृतिपटल से नष्ट हो जाती हैं, उनकी राख से एक नया जीवन सामने उभर कर आने लगता हैह्लह्लईश्वर प्रदत्त एक दिव्य उपहार, विस्मृत न किये गये जीवन का चिह्न, एक आवास में पुनर्जन्म और सर्वशक्तिमान् का आलिंगन; इस तथ्य का संकेत कि गहन तमसपूर्ण घड़ी में भी उन सर्वशक्तिमान् का ध्यान इनसे दूर नहीं हुआ था, उनकी दया कम नहीं हुई थी। उनकी बाहें निरन्तर फैल रही थींह्लह्लअपने इस भटके हुए प्राणी को अपने आलिंगन में लेने के लिए।

इन सभी महिला रोगियों की स्थिति में सुधार हो रहा है। ईश-कृपा से वे अपने खोये हुए प्रेमपूर्ण और सम्मानित व्यक्तित्व को पुनः प्राप्त कर रही हैं। अन्ततः भिखारी कौन नहीं है? प्रभु की कृपा के लिए, उनके दर्शनों के लिए हम सभी तो लालायित हैं! अपनी अनन्त प्रार्थनाओं के उत्तर की सभी को प्रतीक्षा है।

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।''ह्ल **स्वामी शिवानन्द**

## श्री विश्वनाथ मन्दिर का ६८ वाँ प्रतिष्ठा महोत्सव

**''भगवान् शिव आपके हृदय में प्रकाशित परम ज्योति हैं। उनके स्वरूप पर ध्यान करें। नित्य उनकी पूजा करें। वे अपने दर्शन दे कर आपको धन्य कर देंगे।''**

*सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज*

श्री विश्वनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा का ६८ वाँ पावन दिवस मुख्यालय आश्रम में ३१ दिसम्बर २०११ को अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया।

उत्सव से पूर्व तीन दिवस, अर्थात् २७ से २९ दिसम्बर तक अपराह्न में तीन घण्टे पावन पंचाक्षरी मन्त्र का कीर्तन किया गया। आगामी दिन अर्थात् ३० दिसम्बर को प्रातः ७ बजे से सायं ७ बजे तक इसी पावन मन्त्र का अखण्ड कीर्तन किया गया। ३१ दिसम्बर के पावन दिवस पर कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः ५ बजे प्रार्थना तथा ध्यान द्वारा हुआ। उसके तुरन्त बाद प्रभातफेरी की गयी। विश्व-शान्ति हेतु विशेष यज्ञ भी हुआ।

प्रातः ९ बजे से दोपहर १२ बजे तक श्री विश्वनाथ मन्दिर के गर्भगृह में भगवान् श्री विश्वनाथ का अभिषेक, अलंकार, लक्षार्चना वैदिक मन्त्रों सहित की गयी जिसमें आश्रम के सभी संन्यासी, ब्रह्मचारी, साधक, भक्त एवं अतिथि सभी ने सम्मिलित हो कर स्वयं भाग लिया। इसके साथ-साथ भगवान् शिव से सम्बन्धित आत्मोत्प्रेरक भजन-कीर्तन भी चलता रहा जिसने समस्त भक्तों के हृदय दिव्य रस से आपूरित कर दिये। दोपहर १२ बजे भव्य रूप से सुसज्जित भगवान् को महाभोग अर्पित करके मंगल आरती की गयी। पावन प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

भगवान् श्री विश्वनाथ और सद्गुरुदेव की अपार कृपा-वृष्टि सब पर हो!

## मुख्यालय आश्रम में नव-वर्ष का कार्यक्रम

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी मुख्यालय आश्रम में नव-वर्ष के शुभागमन की पूर्व-सन्ध्या ३१ दिसम्बर २०११ को अत्यन्त हर्षोल्लास एवं आध्यात्मिकतापूर्वक नव-वर्ष २०१२ का स्वागत करते हुए मनाया गया। सायं ७.३० पर प्रार्थना और स्तोत्रों द्वारा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात् आश्रम के संन्यासी एवं ब्रह्मचारियों द्वारा आत्मोत्थापक भजन-कीर्तन किया गया। फिर जापानी पारम्परिक 'कठपुतली नृत्य' दिखाया गया जिसके द्वारा शान्ति एवं सामंजस्यता का सन्देश दिया गया था।

श्री हरिकृष्ण शाह द्वारा सुमधुर सितारवादन द्वारा सद्गुरुदेव को स्वरांजलि समर्पित की गयी। सभी उपस्थित दर्शक-श्रोताओं को परम पूज्य गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी के वीडियो द्वारा दर्शन एवं नव-वर्ष को आत्मोत्थापक सन्देश श्रवण का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने उपस्थित साधकों एवं भक्तों को प्रेरणाप्रद आशीर्वचन दिये। इस शुभ अवसर पर पुस्तकों का तथा सीडिओं का विमोचन भी किया गया। इसके उपरान्त २०११ को विदाई देने तथा २०१२ का सुस्वागत करने के लिए १२ बजे तक ध्यान किया गया। आरती तथा विशेष प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सर्वशक्तिमान् प्रभु तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद हम सब पर हों कि हम इस नव-वर्ष को दिव्यता से भर दें!

## परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ राउरकेला (ओडिशा) शाखा के प्रेमपूर्ण आमन्त्रण पर डी. एल. एस. मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने २८ दिसम्बर २०११ को, ३४ वें अखिल ओडिशा दिव्य जीवन संघ के आध्यात्मिक सम्मेलन में तथा राज्यस्तर के ७ वें युवा शिविर (२९ दिसम्बर से १ जनवरी २०१२ तक) में भाग लेने के लिए राउरकेला के लिए प्रस्थान किया।

२९ दिसम्बर की सुबह, श्री स्वामी जी महाराज युवा शिविर के उद्घाटन के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तथा वहाँ आशीर्वचन दिया।

सायंकाल में श्री स्वामी जी महाराज ने सम्मेलन के स्थान भंज भवन में 'दिव्य जीवन ध्वजा' फहराई तथा दीप प्रज्वलित करके सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन के चारों दिन श्री स्वामी जी महाराज ने सायंकालीन सत्रों में श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिये। डी. एल. एस. राउरकेला शाखा ने ३१ दिसम्बर को 'इस्पात जनरल अस्पताल' में रक्तदान शिविर आयोजित किया था। श्री स्वामी जी महाराज ने शिविर का उद्घाटन किया तथा भक्तों की निष्काम सेवा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री स्वामी जी महाराज डी. एल. एस. राउरकेला शाखा तथा डी. एल. एस. स्टील टाउनशिप शाखा भी गये तथा भक्तों को आशीर्वचन दिये।

२ जनवरी २०१२ को श्री स्वामी जी महाराज, श्री बलदेव मेहरा तथा श्री उमेश भट्ट के साथ श्री स्वामी चिदानन्द हरमिटेज शान्ति आश्रम, बालिगुआली गये तथा वहाँ दो दिन रुके। श्री स्वामी जी महाराज ने बालिगुआली आश्रम के लेखे का तथा गतिविधियों का निरीक्षण किया और वहाँ के प्रबन्धन को और अच्छी तरह चलाने हेतु निर्देशन दिये।

६ जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज डी. एल. एस. नारायणपुर शाखा की रजत-जयन्ती के पावन अवसर पर आयोजित किये गये सम्मेलन में भाग लेने के लिए गोपालपुर गये। श्री स्वामी जी महाराज ने सम्मेलन-स्थल पर दिव्य जीवन ध्वजा फहराई तथा उपस्थित जनसमूह को प्रेरणाप्रद प्रवचन दिये।

ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के निमन्त्रण पर श्री स्वामी जी महाराज ने 'सेनेट हॉल' में आयोजित उनकी सभा में भाग लिया। सभा की अध्यक्षता प्रोफेसर जयन्तकुमार महापात्र, विश्वविद्यालय के कुलपति ने की। श्री स्वामी जी महाराज ने 'विद्यार्थी-वर्ग को सार्थक बनाने में आध्यात्मिकता की भूमिका' विषय पर प्रवचन दिया जिसे विद्यार्थियों तथा प्राध्यापक-वर्ग द्वारा अत्यन्त भली-भाँति ग्रहण किया गया। श्री स्वामी जी महाराज ने 'स्वामी शिवानन्द स्मृति छात्र-वृत्ति' लेने वाले विद्यार्थियों से भी बातचीत की। श्री स्वामी जी महाराज ७ जनवरी २०१२ को वापिस आश्रम लौटे।

१५ जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज ने आन्ध्र प्रदेश की सांस्कृतिक यात्रा के लिए आश्रम से प्रस्थान किया। श्री स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ पद्मारावनगर, हैदराबाद के भक्तों को १६ जनवरी के सत्संग में आशीर्वचन दिये। वहाँ से १८ से २० जनवरी तक '३८ वें अखिल आन्ध्र प्रदेश दिव्य जीवन संघ आध्यात्मिक सम्मेलन' में सम्मिलित होने के लिए श्री भद्राचलम् के लिए प्रस्थान किया। श्री स्वामी जी महाराज ने वहाँ 'दिव्य जीवन ध्वजारोहणम्' तथा 'ज्योति प्रज्वलनम्' द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन किया।

श्री स्वामी जी महाराज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की तथा प्रत्येक दिवस के विषयानुसार दोनों सत्रों में प्रवचन दिये; यथा : वेदों तथा उपनिषदों के अनुसार दिव्य जीवन; श्रीमद्भागवत के अनुसार, रामायण के अनुसार तथा सन्तों

की शिक्षाओं के अनुसार दिव्य जीवन। श्रीमुरली-कृष्णमाचार्युलुह्लह्लअथर्ववेद के विद्वान्, श्री स्थालासाईह्लह्ल यजुर्वेद के विद्वान्, श्री समुद्रला लक्ष्मणैया, श्री बोप्पा अरुनादेवी, श्री स्वामी सत्यव्रतानन्द जी, श्री स्वामी प्रसन्नात्मानन्द जी, श्री रामायणाश्रमा, श्री चातालवाड़ा वेंकटेशय्या, डा. सुब्बा राव तथा अन्य विद्वज्जन सम्मेलन में सम्मिलित हुए तथा उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधित किया। सम्मेलन अत्यन्त भली-भाँति आयोजित किया गया था तथा इसमें आन्ध्र प्रदेश के विभिन्न भागों से ३००० से अधिक प्रतिनिधि भाग लेने के लिए आये हुए थे। संस्कृत कालेज, हिन्दुपुर के प्रिंसिपल, श्री एम. टी. अलवार ने विधि-संचालक के रूप में कार्यक्रम का अत्यन्त भली-भाँति संचालन किया।

शान्ति आश्रम की पूज्य ज्ञानेश्वरी माता जी के प्रेमपूर्ण अनुरोध पर श्री स्वामी जी महाराज, श्री स्वामी ओंकार जी महाराज के ११८ वें जन्मोत्सव में सम्मिलित होने के लिए २१ जनवरी को तोतापल्ली गये। २६ जनवरी को श्री स्वामी जी ने काकिनाडा शाखा के सत्संग में भाग लिया तथा उनकी शाखा के नये भवन 'शिवानन्द क्षेत्रम्' का उद्घाटन भी किया।

श्री स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ विजयनगर शाखा में २३ जनवरी को भाग लिया। डा. चलासानी रंगाराव जी तथा डा. चलासानी विजय लक्ष्मी जी का 'कुइन्स एन. आर. आई. हास्पिटल, विशाखपत्तनम्' के क्रमशः प्रैज़िडेंट एवं डायरेक्टर के प्रेमपूर्ण आमन्त्रण पर श्री स्वामी जी महाराज ने चिकित्सालय के डाक्टरों तथा स्टाफ-सदस्यों को सम्बोधित करते हुए 'चिकित्साविज्ञान में आध्यात्मिकता की आवश्यकता' विषय पर प्रवचन दिया। श्री स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ विशाखपत्तनम् शाखा के रात्रि सत्संग के समय नव-निर्मित योग भवन में प्रवचन दिया।

श्री स्वामी जी महाराज २४ जनवरी २०१२ को मुख्यालय आश्रम में वापिस पहुँचे।

## आत्मार्पण ही परम साधन है

अहंकार सच्ची भक्ति के लिए महान् बाधा है।

भक्ति का मार्ग आत्मार्पण का मार्ग है। जब तक मनुष्य ने मैं अथवा अहंकार का अर्पण नहीं किया, तब तक वह सच्ची भक्ति को नहीं जान सकता।

मैं अथवा अहंकार की मृत्यु ही आत्मार्पण है।

आत्मार्पण द्वारा अहंकार की मृत्यु होने से नया आध्यात्मिक जन्म हो जाता है।

जितना अधिक आत्मार्पण हुआ, उतनी ही अधिक कृपा की प्राप्ति होगी।

जिस अंश तक आत्मार्पण होता है, उसी अंश तक ईश्वर-कृपा की प्राप्ति होती है।

पूर्ण आत्मार्पण होना चाहिए। अपने लिए कुछ भी न रखिए।

पूर्ण व्यक्तित्व, मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार को ईश्वर के प्रति अर्पित कर डालिए।

यदि मन कहता है, 'मैं तेरा हूँ, मेरे प्रभु', यदि अहंकार कहता है, 'मुझे हाईकोर्ट का जज बनना है', यदि बुद्धि कहती है, 'मैं महान् भक्त हूँ', यदि चित्त कहता है, 'मैं सिद्धियों को प्राप्त करूँगा'ह्लह्लतो यह पूर्ण आत्मार्पण नहीं है। यह ईश्वर को, जो अन्तर्यामी तथा साक्षी है, ठगना है। ***स्वामी शिवानन्द***

# पावन स्मृति में

## सम्माननीय श्री के. आर्यदेवरत्नम्

श्री के. आर्यदेवरत्नम्, जो कि दिव्य जीवन संघ, मलेशिया शाखा के न्यासी थे तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रिय शिष्य थे, ने २३ दिसम्बर २०११ को अपराह्न १२.३० बजे सर्वशक्तिमान् भगवान् के चरणों में निवास प्राप्त कर लिया।

श्री आर्य, जैसा कि वह श्रद्धा सहित जाने जाते थे, श्रीलंका के एक अत्यन्त धार्मिक परिवार में जन्मे थे। १० वर्ष की अल्पायु से ही उन्होंने पूर्णतया शाकाहारी रहने एवं प्रार्थना और पूजामय जीवन जीने का पथ चुन लिया था। उन्होंने 'कोलालम्पुर टैक्नीकल कॉलेज' से स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त 'स्ट्रैथक्लाइड युनिवर्सिटी, लन्दन' से इंजीनियरी की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने टैक्नीकल एसिसटेंट से प्रारम्भ करके अन्ततः 'रोड्स एण्ड वर्क्स' के डाइरेक्टर तक के सम्पूर्ण समय में 'कोलालम्पुर सिटी हाल' में कार्य किया।

श्री आर्य का १९८६ में दिव्य जीवन संघ से सम्पर्क हुआ और तभी से वे सेवा की साकार प्रतिमा तथा संघ की शक्ति के स्तम्भ बन गये। वे क्रमशः संघ की समिति के सदस्य, महासचिव, उपाध्यक्ष और अन्ततः न्यासी बने। उन्होंने 'प्रणवानन्द ट्रस्ट फंड' के समिति सदस्य के रूप में तथा 'डिवाइन मैसेंजर' के सह-सम्पादक के रूप में भी सेवा की। दिव्य जीवन संघ की ४३ वर्ष के समर्पित सेवा-काल में उन्होंने संघ तथा आश्रम के विकास में अत्यधिक योगदान दिया। अत्यन्त दानशील होने के कारण (१९८३ में) प्रणवानन्द समाधि मन्दिर; (१९८४ में) शिवानन्द चिकित्सालय; (२००० में) बहुप्रयोजन विस्तारण-भवन; (२००८) में योग भवन तथा (२०११ में) शिवानन्द ऑफ़नेज होम, बाटु केव्ज के लिए दिल खोल कर दान दिया। तकनीकी ज्ञान से सम्पन्न होने के कारण तथा सर्वश्रेष्ठ कार्य के प्रति समर्पित होने के कारण उन्होंने इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया कि सम्पूर्ण निर्माण-कार्य सर्वोत्तम हो।

श्री आर्य को दिव्य जीवन संघ मलेशिया के संस्थापक परम पूज्य श्री स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के साथ कार्य करने का तथा मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्तों का दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुख्यालय के भूतपूर्व परमाध्यक्ष श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज तथा वर्तमान परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज के वे विशेष विश्वास एवं प्रेम के पात्र रहे। दिव्य जीवन संघ के प्रति उनकी विशेष एवं समर्पित सेवाओं को देखते हुए परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने उन्हें 'गुरुसेवारत्न' तथा 'गुरुभक्तिरत्न' की पावन उपाधियों से विभूषित किया।

श्री आर्य जी के सेवा-कार्य तथा दान-कार्य केवल दिव्य जीवन संघ तक ही सीमित नहीं थे। वे 'श्री कन्दस्वामी मन्दिर' तथा 'कलमण्डपम्' के साथ भी घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध थे; वे 'मलेशियन साइक्लोन शैवाइट्स एसोसिएशन' की तकनीकी समिति के भी सदस्य थे। इसके लिए उन्हें 'शैव तोण्ड शिरोमणि' का सम्मान भी दिया गया था। वे अन्य गैर सरकारी संस्थाओं की लिए भी समय, परिश्रम तथा वित्तीय सहायता दिया करते थे।

श्री आर्य के अन्तिम समय में दिव्य जीवन संघ मलेशिया शाखा के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज, उनके प्रिय परिवार के तथा दिव्य जीवन संघ शाखा के सदस्यों द्वारा निरन्तर महामृत्युंजय-मन्त्र, प्रणव-मन्त्र, राम-मन्त्र तथा शान्ति-मन्त्र का गान होता रहा। अन्तिम क्षण से कुछ ही पूर्व श्री स्वामी जी, श्रीमती आर्य तथा उनके बच्चों ने मुख में गंगाजल डाला। तब श्री स्वामी जी ने उनके कानों में महावाक्य का उच्चारण किया, तभी उसी समय उन्होंने नश्वर देह को त्याग दिया।

श्री आर्य के जाने से दिव्य जीवन संघ शाखा में गहरी शून्यता व्याप्त हो गयी है, तथापि संघ के प्रति उनकी अनुपम समर्पित सेवाओं के लिए एवं उनके निजी सद्गुणों के लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जाता रहेगा। मलेशिया दिव्य जीवन संघ शाखा की प्रबन्ध समिति, अन्य सभी शाखाएँ तथा सभी भक्त अत्यन्त विनम्रतापूर्वक उनके अद्वितीय योगदान के लिए प्रेमपूर्वक एवं प्रशंसापूर्वक श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

परम पिता परमात्मा तथा परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री आर्य जी की आत्मा को परम शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें!

# सूचना

## राजा पार्क, जयपुर, राजस्थान की दिव्य जीवन संघ शाखा की स्वर्ण-जयन्ती का कार्यक्रम

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अहैतुकी कृपा से दिव्य जीवन संघ की राजा पार्क, जयपुर शाखा अपनी स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष्य में १३ से १५ अप्रैल २०१२ तक एक त्रि-दिवसीय आध्यात्मिक सम्मेलन सिद्धेश्वर मन्दिर, राजा पार्क, जयपुर (राजस्थान) में आयोजित कर रही है। इस सम्मेलन में मुख्यालय से वरिष्ठ सन्त-वर्ग तथा अन्य संस्थाओं से विद्वज्जन आशीर्वचन देंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा विश्व-शान्ति के लिए आयोजित इस सम्मेलन में दिव्य जीवन संघ की सभी शाखाओं के सदस्यों एवं भक्तों को सादर एवं हार्दिक आमन्त्रण है।

प्रतिनिधि शुल्क : रु. २००/-

सभी प्रेषित धनराशि कृपया **'डिवाइन लाइफ सोसायटी, राजा पार्क, जयपुर'** के नाम पर जयपुर में देय बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक द्वारा भेजें।

**अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क-सूत्र :**

(१) श्री जी. एन. बोधा, अध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ, राजा पार्क शाखा, जयपुर
२३८-बी, पार्वती मार्ग, राजा पार्क, जयपुरह्नह्न३०२ ००४ (राजस्थान)

(२) प्रो. भगवती पी. शास्त्री, सचिव, मो. नं. ९४१३११४७६०

(३) श्री राजीव धवन, सह सचिव, मो. नं. ९९५०५५७४५

* * *

# सूचना

## आध्यात्मिक शिविर

### दिव्य जीवन संघ, चंडीगढ़ शाखा का १०, ११ मार्च २०१२ को वार्षिकोत्सव

दिव्य जीवन संघ, चंडीगढ़ शाखा, चंडीगढ़ शिवानन्द आश्रम की चतुर्थ वर्षगाँठ १० और ११ मार्च २०१२ को मना रही है। इस शुभ अवसर पर वहाँ एक आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया जा रहा है। मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्त इस अवसर की शोभा वृद्धि करेंगे। सभी भक्त इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो कर अत्यधिक आध्यात्मिक उत्थापन की अनुभूति प्राप्त करने के लिए सादर आमन्त्रित है।

**नामांकन तथा विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क-सूत्र**

(१) श्री एफ. लाल कंसल, अध्यक्षह्नह्न०९८१४०१५२३७

(२) डा. रमणीक शर्मा, सचिवह्नह्न०९८१४१०५१५४

**पत्रव्यवहार के लिए**

सचिव, शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ, #२, सैक्टर २९-ए,
चंडीगढ़ह्नह्न१६० ०३०, दूरभाषह्नह्न०१७२-२६३९३२२

# मैंने गुरुदेव शिवानन्द जी में क्या देखा?

**श्री स्वामी याज्ञवकल्यानन्द जी (डा. श्री शिवानन्द अध्वर्यू, एम. बी.बी.एस, राजकीय चिकित्सालय वीरनगर)**

१९५० में अपनी 'अखिल भारत एवं श्रीलंका यात्रा' के दौरान श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज बम्बई भी आये थे भारतीय विद्याभवन में दिये गये प्रवचनों में से मैने भी उनका एक प्रवचन सुना। अभी भी मुझे स्पष्टतया स्मरण है कि वे मंच पर कैसे सिंह की भाँति गर्जना कर रहे थे।

तब मैंने उन्हें आश्रम आने की अच्छा व्यक्त करते हुए पत्र लिखा, और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब एक सप्ताह के भीतर ही उनका उत्तर प्राप्त हुआ इतन आकर्षक, सुन्दर और निर्देशन पूर्ण कि उसने मुझे मानो आनन्दकुटीर की ओर पकड़ कर खींच ही लिया हो।

१७. मई, १९५२ का वह परम सौभाग्यशाली दिवस मेरे जीवन में आया जब मैंने माँ गंगा में स्नान तथा श्री स्वामी शिवानन्द जी का दर्शन पाया। तब से अब तक मैं २५ बार से अधिक बार आश्रम जा चुका हूँ और मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा है कि मैं आश्रम का अन्तेवासी ही हूँ। मेरे गुरु बस मेरे लिए हैं।

स्वामी शिवानन्द जी की उदारता मेरे लिए सर्वोच्च आकर्षक का विषय है। वे केवल यह शिक्षा मात्र ही नहीं दजेते कि सभी धर्म समान हैं, प्रत्युत स्वयं इसी का दृढ़ता पूर्वक पालन करते हैं। कोई व्यक्ति उन्हें कभी सत्सं-प्रार्थना का आरम्भ या ''अल्लाह इलिल्ला'' से करते हुए पायेगा। इस विचार को लोगों के हृदय में बैठा देने के उद्देश्य से उन्होंने १९५३ में 'सर्व धर्म सम्मेलन' का आयोजन किया जिसमें सभी धर्मों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। वे आधुनिक तथा अतीत कालीन सभी सन्त मनीषियों का सम्मान करते हैं।

स्वामी जी के हृदय में हरिजनों तथा निम्नवर्ग एवं सभी जाति के व्यक्तियों के लिए एक समान भ्रातृभावना है। सरकार द्वारा निमय बनाये जाने से बहुत पहले से ही उनके आश्रम के मन्दिरों के द्वार सभी के लिए खुले हैं। हरिजन को कभी वे निरादर पूर्वक अथवा अपेक्षा पूर्वक न बुला कर ''हैल्थ आफीसर'' (स्वास्थ्य अधिकारी कह कर पुकारते हैं। वे सफ़ाई कर्मचारियों को भी स्वयं भोजन परोस कर सेवा करते हैं। उनकी दृष्टि में जाति-पाति का भेद नहीं। सभी में वे उस अमर अविनाशी एकमेव परमात्मा को देखते हैं। हम सभी २ अक्तूबर को 'हरिजन दिवस' मनाते हैं, क्या आप जानते हैं कि आश्रम में यह कैसे मनाया जाता है? सभी आमन्त्रित हरिजनों को आश्रम के संन्यासियों द्वारा गंगा-स्नान करवाया जाता है फिर उन्हें नये वस्त्रों का जोड़ा पहनाते हैं और फिर मन्दिर दर्शन के लिए ले जाते हैं, उसके पश्चात् उन्हें दावत दी जाती है।

स्वामी शिवानन्द जी को सबकी ऐसा सेवा करना सर्वाधिक प्रिय है। सन्तों में सर्वप्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने कहा है। कि निष्काम सेवा' सभी साधकों के लिए अनिवार्य है। यह साधना-सोपान की प्रथम मूलभूत सीढ़ी है। उस क्षेत्र के निर्धन लोगों की सहायतार्थ आश्रम द्वारा नेत्र शिविर आयोजित किये जाते थे तथा उन शिविरों के समय स्वयं गुरुदेव तथा अन्य संन्यासी नारायण भाव सहित लोगों की सेवा करते थे।

स्वामी जी सदैव आशावादी रहते हैं तथा दूसरों को उत्साह एवं प्रेरणा देते रहते हैं। वे अपनी बातों द्वारा, प्रवचनों द्वारा तथा पत्रों द्वारा सबको प्रेरणा देते हैं। इनका कहना है कि परमात्मा साक्षात्कार इसी जन्म में, यहाँ त कि अभी इसी क्षण में प्राप्त कर सकते हैं। अपने नेत्रों में से एक में उन्होंने मुझे लिखा,

''आप केवल अपने रोगियों के लिए ही नहीं, मेरे लिए भी एक अत्यन्त प्रिय कृपालु देवता सदृश्य हैं। मैं सदैव आपके

साथ रहूँ। मैं आपके सेवा एवं अध्यात्मिक उन्नति के पथ पर सैदव आपके साथ रहूँगा और आपको हर प्रकार की सहायका करूँगा। कृपया और अधिक मात्रा में धैर्य धारण करेंहृहृआपका हृदय में जो भी इच्छाएँ सब पूर्ण होगी। मैं आपके कदमों में शक्ति एवं प्रकाश बन कर रहूँगा।'' आगे भी उन्होंने लिखा, ''आप जन्म से ही सन्त हैं। आप प्रशंसनीय सेवा कर रहे हैं। आप जितना कर सकते हैं, जितने प्रकार से कर सकते हैं, जितने लोगों का कर सकते हैं उतना भला कर रहे हैं; हर स्थान पर, हर समय, उत्साह पूर्वक, शक्ति पूर्वक, प्रेम पूर्वक और पूर्ण हृदय से कर रहे हैं। यही सच्ची सेवा है। यही भगवान् की सच्ची पूजा है।'?

स्वामी शिवानन्द जी मानव जाति द्वारा ज्ञात सभी दैवी गुणों का मूर्तिमान स्वरूप है, उन्होंने विश्व को 'समन्वय योग' के रूप में एक महान् उपहार प्रदान किया है जिस अपना कर व्यक्ति शरीर, मन, हृदय, एवं आत्मा सभी को पूर्णरूपेण विकसित कर सकता है। उनके हृदय की विशालता एवं महानता को तो कोई वर्णन ही नहीं कर सकता। उनका जीवन ही मात्र देने, देने और देने के लिए है। आज के वर्तमान विद्यमान सन्तों में स्वामी शिवानन्द जी महाराज सन्त हैं। यह इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि मात्र २५ वर्षों की अल्पावधि में ही वह विश्व के सभी देशों में जाने जाते हैं, पूजित होते हैं तथा तथा उनका अनुसरण करते हैं। अनेकों के जीवन उन्होंने पूर्णतया परिवर्तित कर दिये हैं। प्रत्येक देश में उनकी पुस्तकें उपलब्ध हैं तथा विश्व की लगभग सभी भाषाओं में उनका अनुवाद हो चुका है। विश्व के इतिहास में इसके बराबर और कोई उदाहरण नहीं मिलता। हम सौभाग्यशाली हैं कि उनके युग में जन्में तथा ऐसे महान् सद्गुरु से निर्देशन प्राप्त करके का सुअवसर प्राप्त हुआ।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

# मेरा शिवानन्द आश्रम आना

**श्री एलबर्ट बौनविंन्सर एमस्टरडम, (नीदरलैंड)**

कुछ दिन पहले मैं हिमालय में इधर-उधर घूम रहा था। मेरे पास एर छोटा रॅक्सैक था, जिसमें थोड़े से गर्म कपड़े, एक सोने के लिए थैला और एक -एक गीता एवं बाइबिल की पुस्तकें थी। यह मेरी सत्य की असफल खोज थी। दिन-रात मैं आत्मविश्लेषण करता रहता था, और इतना अधिक कर चुका था कि लगता था अब कुछ भी शेष नहीं रहा है। और एक दिन लाहौल घाटी में पर्वत शिखर पर बैठा हुआ मैं फूट-फूट कर रो पड़ा। मुझे सभी आशाएँ धूल में मिलती दिखायी दे रही थीं।

इस निराशाजनक आन्तरिक खोज क बाद केवल एक ी तथ्य शेष बचा था। भीतर केन्द्रीय स्थल में किसी न किसी प्रकार एक विश्वास, उस सारतत्त्व के प्रति, उस अज्ञात के प्रति, भगवान् के प्रति अभी भी विद्यमान था। कोई भी पुस्तक कोई भी दर्शन मुझे 'उनका' वर्णन नहीं कर सकता था। नीचे शिमला पहुँच कर मैं अचानक ही ऋषिकेश की गाड़ी में बैठ गया। स्वामी शिवानन्ज जी के सम्बन्ध में मैंने काफी सुन रखा था, किन्तु मैं उनके प्रति संशक्ति सा था, जैसा कि 'योग अथवा 'हठयोग' के विषय में सुन कर बहुत से यूरोपियन अक्सर हो जाते हैं। और जम में शिवानन्द आश्रम में प्रविष्ठ हुआ संदेहपूर्ण मन से ही हुआ, यहाँ तक कि स्वामी शिवानन्द जी के व्यक्तत्व के प्रति भी मेरा मन संशक्ति ही था।

उसी दिन अपराह्न में मै ंथोड़ा घूम कर लौट रहा था कि मैंने स्वामी जी को अपने शिष्यों सहित सामने सड़क पर आते हुए देखा। उन पर दृष्टि पड़ते ही मेरा हृदय एक अकथनीय हर्ष से भर गया। उनकी दृष्टि मेरे ऊपर टिकी हुई थी, उन्होंने मित्रता पूर्ण एवं स्वागतभाव से कुछ शब्द कहे। यह कोई चिरप्रतिक्षित महान् सत्य से सम्बन्धित शब्द नहीं थे, किन्तु जितनी प्रसन्नता यह मुझ में भर गये, वैसा शायद ही अन्य ऐसे कुछ हो जो इसके समान हो। अत्यन्त अल्प एवं सहज, किन्तु दिव्य प्रेम और अनुकम्पा से ओत-प्रोत थे वे शब्द! समस्त वातावरण में इनसे ऐसी शान्ति व्याप्त हो रही थी कि मैं अपने कक्ष की तीव्रगति से बढ़ने लगा अपने उस आनन्द को एकान्त में अनुभव करने के लिए, जो कि मैंने इससे पूर्व कभी अनुभव नहीं किया था, और उस प्रकाश में स्वयं को भरा हुआ अनुभव करने के लिए, जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था। जो कुछ पुस्तकें मुझे अभी तक विश्वास नहीं दिला पाईं थीं, वह स्वामी शिवाननन्द जी की उपस्थिति मात्र ने कर दिखाया! कैसे मैं उनके सान्निध्य में रहनी की इच्छा से भर उठा! कैसे मैं उनके शब्दों और उनकी पुस्तकों में लीन हो गया। आश्रम में व्यतीत किये इन दिनों को मैं कैसे भूल सकता हूँ, उनकी उपस्थिति में होने वाली अनुभूति, उस शक्तिपूर्ण वातावरण मैं बिताये हुए दिन जहाँ उनके शिष्य आश्रम की विविध गति विधियों में अथक कार्य करने में निमग्न हैं।

सहस्रों की संख्या में लोग आते हैं और इन स्वामी जी को असीम आतिथ्य सत्कार में सुख-शान्ति प्राप्त करते हैं। सहस्रों ऐसे सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं जिन्हें उनके श्रीमुख से निःसृत शिक्षाओं को श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। अन्य लोगों के पास वे अपनी पुस्तकों तथा पत्रों द्वारा पहुँच जाते हैं, उनके सतत कार्यरत छापे खाने को देख कर हृदय प्रसन्नता से भर जाता है। यहाँ कोई भी सत्य, एकाकी कन्दरा में गुप्त नहीं रखा गया है। यह तो समस्त विश्व को प्राप्त करवाया जाता है। उनका यह प्रेम किसी एक स्थान विशेष में, किसी स्थानीय चिकित्सीय कार्यों मात्र में और दान कार्यों मात्रा में थवा व्यक्तगत आशीर्वाद में ही बँधा हुआ नहीं है। यह तो ऐसा प्रेम है जो उनकी पुस्तकों के द्वारा, उनके सन्देशों के

द्वारा और उनके पत्रों के द्वारा समस्त विश्वभर में प्रसारित एवं स्पन्दित हो रहा है।

मैं स्वामी जी के प्रति आजीवन आभारी रहूँगा, उनके उस कार्य के लिए, जो उन्होंने एक क्षण भर में मुझमें कर दिया है। प्रसन्नता और शान्ति से आपूरित मैंने आश्रम से विदायी ली। मैं पूर्णतया परिवर्तित हो गया था; मेरे लिए यह विश्व परिवर्तित हो गया था। उसी क्षण से उनका एक-एक शब्द मेरे लिए पावन हो चुका है।

अनुवादिका : श्री स्वमी शिवाश्रितानन्द माता जी)

# जगत् : नाम, रूप और पदार्थ

जगत् में हम जो-कुछ भी देखते हैं, वह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाशह्नह्नइन पाँच तत्त्वों से बना हुआ है। अनुभव के इन पदार्थों के अतिरिक्त कहीं कुछ भी नहीं है। सभी पदार्थों की संरचना की सामग्री इन्हीं तत्त्वों से बनी है और यही तत्त्व सभी व्यक्तियोंह्नह्नजैव-अजैव सभी प्रकार के व्यक्तियोंह्नह्नके शरीर भी हैं।

नाम, रूप और पदार्थों के क्षेत्र में यह जगत् पाँच तत्त्वों से निर्मित है। इन तत्त्वों के तीन पक्ष हैं। प्रथमतः उनमें भौतिकत्व होता है। पृथ्वी में भौतिकत्व है। यह किसी वस्तु से निर्मित है। यह कोई वस्तु 'है'। हम यह नहीं कह सकते कि पृथ्वी कोई वस्तु नहीं है। तुरन्त ही हम यह नहीं कह पायेंगे कि पृथ्वी किस वस्तु से निर्मित है; परन्तु यह स्पष्ट है कि यह ठोस द्रव्य है। यह रिक्तता अथवा वायवीय शून्यता नहीं है। इसका लक्षण परिभाष्य है। यह लक्षण है नाम-रूप-समूह। उदाहरणार्थ, हम इसे पृथ्वी कहते हैं। यह नाम है। परिभाषा नाम है, इसका स्वरूप जो भी हो। किसी वस्तु के लक्षण-वर्णन को उस वस्तु का नाम कहा जा सकता है। साधारणतः, विशेष रूप से भारत में, किसी विशेष व्यक्ति अथवा वस्तु को दिया गया नाम, उस व्यक्ति अथवा वस्तु का वर्णन करता है। नाम किसी सनक का परिणाम नहीं होता। यदि अमुक नाम है, तो यह ना बताना है कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आप किन-किन विशिष्टताओं से निर्मित है।

इस प्रकार नाम पदार्थ की परिभाषा है और इस परिभाषा का सम्बन्ध उस पदार्थ के रूप से है। यदि यह रूप भिन्न होता, तो परिभाषा भी भिन्न होती। नाम-रूप के पीछे वस्तु की तात्त्विकता होती है। इस तात्त्विकता का मानस-दर्शन तुरन्त नहीं किया जा सकता। हम यह नहीं देख सकते कि पृथ्वी किस वस्तु या पदार्थ से निर्मित है। हम केवल इसका बाह्य रूप (जैसा कि वह हमारी अनुभूति तथा बोध को प्रतीत होता है) देखते हैं।

ह्नह्नस्वामी कृष्णानन्द